वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380
वर्ष:5 अंक: 340 रविवार 17 मई 2026
दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia
प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

बीएनआई आईएनसी 2026 का हुआ शानदार आगाज, देशभर से जुटे हजारों बिजनेस लीडर्स

कार्यक्रम में बिजनेस ग्रोथ, लीडरशिप, डिजिटल मार्केटिंग और स्टार्टअप इनोवेशन जैसे विषयों पर विशेष सेशंस आयोजित किए गए...

BNI INDIA
INDIA NATIONAL CONFERENCE
SCION

जयपुर. शाबाश इंडिया

बीएनआई आईएनसी (इंडिया नेशनल कॉन्फ्रेंस) 2026 के पहले दिन का आगाज भव्य उद्घाटन और शानदार कार्यक्रमों के साथ हुआ। सुबह 10 बजे एक्सपो एरिया में प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया, जिसके बाद देशभर से आए सदस्यों के लिए नेशनल चैप्टर मीट्स आयोजित हुईं। देशभर से आए हजारों उद्यमियों, बिजनेस प्रोफेशनल्स और इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स ने इस मेगा नेटवर्किंग इवेंट में हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रेरणादायक उद्घाटन समारोह और विशेष सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुई। पहले दिन कई प्रमुख बिजनेस लीडर्स ने मंच से अपने अनुभव साझा किए और नेटवर्किंग की ताकत पर जोर दिया। कार्यक्रम में बिजनेस ग्रोथ, लीडरशिप, डिजिटल मार्केटिंग और स्टार्टअप इनोवेशन जैसे विषयों पर विशेष सेशंस आयोजित किए गए। इवेंट के दौरान प्रतिभागियों ने एक-दूसरे के साथ नए बिजनेस अवसरों पर चर्चा की और मजबूत प्रोफेशनल रिश्ते बनाए। आयोजन स्थल पर ऊर्जा और उत्साह का माहौल देखने को मिला। बीएनआई आईएनसी 2026 के पहले दिन की सबसे खास बात रही प्रतिभागियों के बीच हाई-एनर्जी नेटवर्किंग और नए सहयोगों की शुरूआत। आयोजकों के अनुसार आने वाले दिनों में और भी बड़े सेशंस, अवॉर्ड समारोह और विशेष गेस्ट स्पीकर्स कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। स्टॉल विजिट्स के दौरान प्रतिभागियों ने बिजनेस नेटवर्किंग और विभिन्न प्रदर्शनों का अवलोकन किया।

टीमवर्क सबसे अहम

कार्यक्रम के दौरान ''अवार्ड्स कैटेगरी 1 – नेशनल टीम रिकॉगनेशन'' में विभिन्न राष्ट्रीय टीमों और सदस्यों को सम्मानित किया गया। इसके बाद की नोट स्पीकर्स जेन लेन ने अपने संबोधन में नेतृत्व, टीमवर्क और नेटवर्किंग की शक्ति पर प्रकाश डाला। शाम के सत्र में स्पॉन्सर प्रेजेंटेशन, ''न्यू रीजन स्पॉन्सर एंड मेंबर अवार्ड्स'' तथा ''कोर वेल्यू अवार्ड्स'' आयोजित किए गए, जिनमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सदस्यों और क्षेत्रों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बीएनआई जयपुर के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर अक्षय गोयल ने कहा कि, मजबूत रिश्ते और विश्वास ही सफलता की असली पूंजी हैं। उनके प्रेरक संबोधन ने उपस्थित सदस्यों में नई ऊर्जा का संचार किया। संध्या में प्रसिद्ध गायिका मोनाली ठाकुर की संगीतमय प्रस्तुति के साथ पहले दिन का समापन शानदार माहौल में हुआ। बीएनआई आईएनसी 2026 का पहला दिन नेटवर्किंग, सम्मान और प्रेरणा से भरपूर रहा। कार्यक्रम में शामिल लोगों ने इसे ''सीखने, जुड़ने और आगे बढ़ने का शानदार मंच'' बताया। बीएनआई इंडिया दुनिया का सबसे बड़ा बिजनेस नेटवर्किंग और रेफरल ऑर्गनाइजेशन है, जो 76 देशों में काम करता है।

पीएम की अपील पर साइकिल से हाईकोर्ट पहुंचे जस्टिस समीर जैन

जयपुर. शाबाश इंडिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पेट्रोल-डीजल बचाने और वीआईपी कल्चर को कम करने की अपील का असर अब न्यायपालिका और शासन के शीर्ष स्तरों पर साफ दिखाई देने लगा है। इसी मुहिम के तहत राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस समीर जैन शनिवार को अपने गांधीनगर स्थित सरकारी आवास से कार के बजाय साइकिल चलाकर हाईकोर्ट पहुंचे। इस दौरान उनके सुरक्षाकर्मी भी उनके साथ साइकिल पर ही मौजूद थे। पूरे रास्ते आम नागरिकों की तरह सादगी से साइकिल चलाते हुए पहुंचे जस्टिस जैन को कोई पहचान नहीं सका। हाईकोर्ट परिसर में उन्हें इस रूप में देख वकीलों और न्यायिक अधिकारियों के बीच यह कदम सराहना और प्रेरणा का विषय बन गया है। पीएम की इस सात सूत्रीय अपील के बाद राजस्थान में सत्ता और प्रशासन का स्वरूप बदलता नजर आ रहा है।

ईंधन बचत का बड़ा संदेश: ग्राम चौपाल में ग्रामीणों से किया सीधा संवाद

पीएम की अपील का असर, इलेक्ट्रिक बस में अफसरों संग ठीकरिया गांव पहुंचे सीएम भजनलाल

जयपुर/बगरू. शाबाश इंडिया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशवासियों से की गई पेट्रोल-डीजल बचाने और पर्यावरण संरक्षण की अपील को राजस्थान में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा लगातार जमीनी स्तर पर उतारते हुए नजर आ रहे हैं। इसी कड़ी में शनिवार को मुख्यमंत्री एक अनूठे और बेहद सराहनीय अंदाज में नजर आए, जब वे उच्चाधिकारियों के पूरे दल के साथ खुद एक इलेक्ट्रिक बस में सवार होकर जयपुर से बगरू के समीपवर्ती ठीकरिया गांव पहुंचे। मुख्यमंत्री का इलेक्ट्रिक बस से गांव पहुंचना न केवल प्रशासनिक बल्कि राजनीतिक गलियारों में भी दिनभर चर्चा का विषय बना रहा। ठीकरिया गांव पहुंचने के बाद मुख्यमंत्री ने वहां आयोजित 'ग्राम विकास चौपाल' कार्यक्रम में हिस्सा लिया और उपस्थित ग्रामीणों से बिल्कुल जमीनी स्तर पर सीधा संवाद स्थापित कर विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की। शनिवार दोपहर बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अपने नागरिक निवास (सीएम आवास) से विशेष इलेक्ट्रिक बस में रवाना हुए थे। इस यात्रा में मुख्यमंत्री के साथ प्रदेश के कई वरिष्ठ प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी भी सह-यात्री के रूप में मौजूद रहे, जिनमें पुलिस कमिश्नर सचिन मित्तल, वरिष्ठ आईएएस मंजू राजपाल, सिद्धार्थ महाजन और जितेंद्र सोनी सहित कई अन्य आला अधिकारी शामिल थे। मुख्यमंत्री का यह औचक ग्रामीण दौरा सिर्फ एक औपचारिक प्रशासनिक कार्यक्रम तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके जरिए उन्होंने समूचे प्रदेश को ईंधन की बचत, कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होने का एक बेहद मजबूत और दूरगामी संदेश भी दिया। ठीकरिया गांव के चौपाल परिसर में पहुंचने पर मुख्यमंत्री का ग्रामीणों द्वारा पारंपरिक तरीके से भव्य स्वागत किया गया।

जब अनाथ मास को मिला भगवान विष्णु का नाम, तब बना पुरुषोत्तम मास

17 मई से प्रारंभ हो रहा है अधिक मास

कौशल मूंदड़ा

भारतीय संस्कृति केवल पर्वों की संस्कृति नहीं, बल्कि समय को भी उत्सव में बदल देने वाली जीवन दृष्टि है। यहां ऋतुएं केवल मौसम नहीं, अनुभूतियां हैं। नक्षत्र केवल आकाशीय बिंदु नहीं, बल्कि जीवन के संकेत हैं और मास केवल तिथियों का क्रम नहीं, बल्कि आत्मजागरण के अवसर हैं। इन्हीं में एक अत्यंत विशिष्ट और आध्यात्मिक महत्व का काल है – पुरुषोत्तम मास, जिसे अधिक मास भी कहा जाता है। इस वर्ष 17 मई से अधिक मास प्रारंभ हो रहा है। इस संवत में ज्येष्ठ मास दो बार आ रहे हैं। पुरुषोत्तम मास भारतीय कालगणना की वह अद्भुत व्यवस्था है, जहां विज्ञान, दर्शन, धर्म और लोकजीवन का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह केवल पंचांग का अतिरिक्त महीना नहीं, बल्कि भारतीय मनीषा की वैज्ञानिक दृष्टि और आध्यात्मिक संवेदना का जीवंत प्रतीक है। पुराणों में वर्णित कथा के अनुसार जब बारह महीनों का विभाजन हुआ, तब एक ऐसा मास रह गया जिसका कोई स्वामी नहीं था। उपेक्षित और अनाथ भाव से वह भगवान विष्णु की शरण में पहुंचा। तब भगवान श्रीहरि ने उसे अपने नाम से अलंकृत करते हुए कहा – आज से तुम पुरुषोत्तम मास कहलाओगे। यही कारण है कि यह मास भगवान विष्णु को समर्पित माना जाता है। यह कथा भारतीय संस्कृति के उस करुणा-दर्शन को प्रकट करती है, जहां तिरस्कृत को भी ईश्वर अपना लेते हैं। भारतीय ऋषि केवल तपस्वी नहीं, बल्कि महान गणितज्ञ और खगोलविद भी थे। उन्होंने सूर्य और चंद्रमा की गतियों का सूक्ष्म अध्ययन कर हजारों वर्ष पूर्व ही समझ लिया था कि सौर वर्ष और चंद्र वर्ष में अंतर होता है। सौर वर्ष लगभग 365 दिन 6 घंटे का होता है, जबकि चंद्र वर्ष लगभग 354 दिनों का। इस प्रकार प्रतिवर्ष लगभग 11 दिनों का अंतर उत्पन्न होता है। यदि इस अंतर को संतुलित न किया जाए, तो हमारे पर्व ऋतुओं से असंतुलित हो जाएंगे। इसी संतुलन के लिए लगभग 32 मास 16 दिन के अंतराल पर एक अतिरिक्त चंद्र मास जोड़ा जाता है, जिसे अधिक मास कहा जाता है। जब किसी चंद्र मास के भीतर सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश नहीं करता, अर्थात उस पूरे मास में कोई संक्रांति नहीं होती, तब वह मास अधिक मास कहलाता है। सामान्यतः प्रत्येक मास में एक संक्रांति होती है, लेकिन जब ऐसा नहीं होता तो वही अतिरिक्त मास अधिक माना जाता है। यह व्यवस्था आधुनिक लीप ईयर की अवधारणा से भी अधिक सूक्ष्म और वैज्ञानिक मानी जाती है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा की गहराई और खगोलीय समझ का अद्भुत उदाहरण है। पुरुषोत्तम मास केवल गणना का संतुलन नहीं करता, बल्कि जीवन में भी संतुलन का संदेश देता है। आज का युग भागदौड़, तनाव और उपभोग का युग है। ऐसे समय में यह मास आत्मचिंतन, जप, तप, सत्संग, दान और आध्यात्मिक साधना की प्रेरणा देता है। विवाह और अन्य मांगलिक कार्य अपेक्षाकृत कम किए जाते हैं तथा भगवान विष्णु, श्रीकृष्ण और सत्यनारायण की विशेष आराधना की जाती है। आधुनिक भाषा में कहें तो यह आध्यात्मिक डिटॉक्स और आत्म-रीसेट का भारतीय स्वरूप है। यह मास हमें स्मरण कराता है कि जीवन में जब भी असंतुलन आए, तब कुछ क्षण रुककर स्वयं को ईश्वर, प्रकृति और आत्मा से जोड़ लेना चाहिए। आज जब पूरी दुनिया भारतीय ज्ञान प्रणाली की ओर आकर्षित हो रही है, तब अधिक मास जैसी परंपराएं हमारे वैज्ञानिक और सांस्कृतिक वैभव का जीवंत प्रमाण बनकर सामने आती हैं। भारतीय परंपरा ने समय को केवल यांत्रिक नहीं माना, बल्कि चेतना और साधना का माध्यम माना है। पुरुषोत्तम मास उसी चेतना का दिव्य विस्तार है, जहां गणित भी भक्ति बन जाता है और विज्ञान भी संस्कृति का उत्सव।

अशक्त गोवंश की सेवा से मिलती है आत्मिक शांति : मधु पाटनी

अजमेर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग, अजमेर की सर्वोदय कॉलोनी इकाई के तत्वावधान में जैन तीर्थक्षेत्र नारेली स्थित गौशाला में 1400 से अधिक गोवंश को हरा चारा अर्पित कर सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम श्रद्धा, सेवा और करुणा के भाव के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महासमिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने कहा कि अशक्त एवं असहाय गोवंश की सेवा करने से मन को आत्मिक शांति प्राप्त होती है तथा पुण्य का संचय होता है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में गौसेवा को विशेष महत्व दिया गया है और यह सेवा भाव मानवता का श्रेष्ठ उदाहरण है। महासमिति की मंत्री सुषमा पाटनी ने जानकारी देते हुए बताया कि स्वर्गीय श्री पदमकांत जी की पुण्यतिथि के अवसर पर तारादेवी गदिया, राजीव गदिया, नीति गदिया, अमित गदिया एवं श्वेता गदिया परिवार के सहयोग से गौमाताओं को हरा चारा अर्पित किया गया। इससे पूर्व श्री दिगंबर जैन महासमिति अजमेर संभाग के अध्यक्ष अतुल पाटनी, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी, महासमिति मंत्री सुषमा पाटनी, सर्वोदय कॉलोनी इकाई की मंत्री रेनू पाटनी, अंजू पाटनी सहित अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों के गौशाला पहुंचने पर गौशाला प्रभारी वीरेंद्र जैन ''टोनी भैया'' ने सभी का स्वागत किया। उन्होंने उपस्थित जनों को गौशाला का भ्रमण करवाते हुए गोवंश के रखरखाव एवं सेवा कार्यों की विस्तृत जानकारी भी दी। कार्यक्रम के अंत में क्षेत्र प्रभारी ब्रह्मचारी भैया सुकांत जैन ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। समारोह सेवा, संवेदना एवं धार्मिक भावनाओं के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

गौशाला नारेली, अजमेर (राज.)
श्री दिगम्बर जैन महासमिति महिला
एवं युवा महिला संभाग, अजमे
आपका हार्दिक स्वागत क

भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धाभाव से सम्पन्न

सोनल जैन की रिपोर्ट

श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिग. जैन मंदिर कमेटी
गौरी का किनारा भिण्ड
आपका
हार्दिक स्वागत
करती है
श्री 1008 शांतिनाथ भगवान
का जन्म, तप, मोक्ष कल्याणक
प्रातः 7 बजे
प्रातः 8 बजे

भिंड शहर स्थित श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, गौरी किनारा में शुक्रवार, 15 मई 2026 को 16वें तीर्थंकर भगवान श्री 1008 शांतिनाथ भगवान का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव 16 परिवारों द्वारा अत्यंत श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान भगवान शांतिनाथ का विशेष अभिषेक एवं पूजन सम्पन्न हुआ। प्रथम कलश चढ़ाने का सौभाग्य बाल ब्रह्मचारी अनिकेत भैया जी को प्राप्त हुआ। वहीं प्रथम शांतिधारा का सौभाग्य भी बाल ब्रह्मचारी अनिकेत भैया जी ने प्राप्त किया। दूसरी शांतिधारा श्री सुनील जैन, सौरभ जैन, अमर जैन एवं शुभम जैन, मुंबई हाल निवासी भिंड द्वारा की गई। महोत्सव में 16 परिवारों द्वारा शांतिविधान एवं निर्वाण लाडू अर्पित किए गए। सम्पूर्ण मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से गूंज उठा और श्रद्धालुओं ने भगवान शांतिनाथ की आराधना कर पुण्य लाभ अर्जित किया। इस अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत बाल ब्रह्मचारी अनिकेत भैया जी का जन्मदिन भी श्रद्धा एवं धार्मिक वातावरण में मनाया गया। सभी श्रद्धालुओं ने भगवान की भक्ति एवं पूजन-अर्चना के साथ उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित कीं। विधानाचार्य श्री शैलू जैन एलआईसी ने जानकारी देते हुए बताया कि बाल ब्रह्मचारी अनिकेत भैया जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में श्री 1008 शांतिनाथ महामंडल विधान का आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि अनिकेत भैया जी शीघ्र ही आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी गुरुदेव से दीक्षा ग्रहण करने वाले हैं, ऐसे में दीक्षा पूर्व उनका यह जन्मदिन विशेष आध्यात्मिक महत्व रखता है। कार्यक्रम में बाल ब्रह्मचारी अनिकेत भैया जी ने अपने मंगल प्रवचनों में कहा कि भगवान शांतिनाथ ने हस्तिनापुर में जन्म लेकर तीर्थराज सम्मेद शिखर से मोक्ष प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि इस संसार में जन्म लेने वाला प्रत्येक मनुष्य एक दिन मृत्यु को प्राप्त होता है, लेकिन जीवन और मृत्यु के बीच गुरु का मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। गुरु ही मनुष्य को सही मार्ग दिखाकर आत्मकल्याण की दिशा प्रदान करते हैं। कार्यक्रम श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

मोती कटरा में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ सम्पन्न हुआ श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव

आगरा. शाबाश इंडिया। शनि अमावस्या के पावन अवसर पर शनिवार को श्री महावीर स्वामी दिगंबर जैन मंदिर, हनुमान चौराहा, मोती कटरा में भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ का भव्य विधान एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी और भगवान के जयघोषों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 7 बजे भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ के महामस्तकाभिषेक के साथ हुआ। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ भगवान का शुद्ध जल एवं विभिन्न पूजन द्रव्यों से अभिषेक कर पुण्य लाभ अर्जित किया। अभिषेक के दौरान मंदिर परिसर भक्ति संगीत, मंगल ध्वनि एवं मंत्रोच्चार से गुंजायमान रहा, जिससे उपस्थित श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। इसके पश्चात पंडित ऋषभ जैन शास्त्री के कुशल निर्देशन में विधिपूर्वक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान सम्पन्न कराया गया। विधान में बड़ी संख्या में महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं ने भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान भक्तों ने भक्ति गीतों, स्तुतियों एवं आराधना के माध्यम से भगवान की महिमा का गुणगान किया। श्रद्धालुओं की आस्था, उत्साह एवं भक्ति देखते ही बन रही थी। आयोजन के दौरान समाज के वरिष्ठजनों, युवाओं एवं महिलाओं ने व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग प्रदान किया, जिससे पूरा कार्यक्रम सुव्यवस्थित, अनुशासित एवं गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। धार्मिक आयोजन में उपस्थित श्रद्धालुओं ने भगवान मुनिसुव्रतनाथ के आदर्शों को जीवन में अपनाने तथा अहिंसा, संयम और सदाचार के मार्ग पर चलने का संकल्प भी लिया। इस अवसर पर अनंत कुमार जैन, अजीत जैन, जयंती प्रसाद जैन, अरुण पाटनी, जितेंद्र जैन, राजकुमार जैन, रविन्द्र जैन, शुभम जैन सहित मोती कटरा जैन समाज के अनेक गणमान्य सदस्य एवं श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। **रिपोर्ट : शुभम जैन**

डॉ. एस. एस. अग्रवाल
चेयरमैन
स्वास्थ्य कल्याण ग्रुप
आमंत्रित करते है

स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक
के
32वें स्थापना दिवस
के अवसर पर आयोजित
रक्तदान शिविर
में

दिनांक : रविवार, 17 मई 2026
समय : प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक
स्थान : स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक,
125, मिलाप नगर, टोंक रोड, जयपुर

आप रिश्तेदारों एवं मित्रों सहित स्थापना दिवस पर पधारें।

विनीत :

बैजयन्ती माला अग्रवाल
ट्रस्टी

आनन्द अग्रवाल
प्रबंध निदेशक

डॉ. सर्वेश अग्रवाल
निदेशक

डॉ. उर्मिल धुरीया
कन्सलटेन्ट
ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन

डॉ. ओ पी गुप्ता
मेडिकल ऑफिसर

डॉ. के.के. मिश्रा
मेडिकल ऑफिसर इंचार्ज
कन्सलटेन्ट, ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन

एवं स्वास्थ्य कल्याण परिवार

☎ 0141-2545293, 2721771, 9982211000

राजनीति

कैद में करुणा...

निमिषा सिंह

आज का यह आलेख उस बालक के नाम है, जो यदि स्वतंत्र होता तो आज 37 वर्ष का युवा होता। यह उन हजारों माताओं के नाम भी है, जिनके बच्चों को उनकी जड़ों, संस्कृति और पहचान से दूर कर दिया गया है। इतिहास गवाह है कि जब सत्ता असुरक्षित महसूस करती है, तब सबसे पहले मासूमियत और असहमति पर प्रहार होता है। ठीक 31 वर्ष पूर्व, 17 मई 1995 को छह वर्षीय गेधुन चोएक्यी न्यिमा, जिन्हें 11वें पंचेन लामा के रूप में मान्यता मिली थी, अचानक दुनिया की नजरों से गायब कर दिए गए। तब से आज तक उनका कोई स्वतंत्र सार्वजनिक प्रमाण सामने नहीं आया। यह केवल एक बच्चे का लापता होना नहीं था, बल्कि तिब्बत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान पर सुनियोजित राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश थी। तिब्बती बौद्ध परंपरा में पंचेन लामा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि वही अगले दलाई लामा की पहचान और पुष्टि में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। चीन भली-भांति जानता है कि यदि इस प्रक्रिया पर उसका नियंत्रण होगा, तो वह भविष्य में तिब्बती नेतृत्व और धार्मिक व्यवस्था को भी नियंत्रित कर सकेगा। इसी कारण वास्तविक पंचेन लामा को गायब कर चीन ने अपनी पसंद के धार्मिक प्रतिनिधि को स्थापित किया। यह घटना तथाकथित ''सिनीसाइजेशन'' अर्थात चीनीकरण की व्यापक नीति का हिस्सा मानी जाती है। आज तिब्बत में लाखों बच्चों को परिवारों से दूर सरकारी बोर्डिंग स्कूलों में रखा जा रहा है, जहाँ उनकी भाषा, धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से उनका संबंध धीरे-धीरे समाप्त किया जा रहा है। यह केवल शिक्षा का मामला नहीं, बल्कि एक पूरी पीढ़ी की पहचान बदलने की प्रक्रिया है। जब किसी समाज को उसकी जड़ों से काट दिया जाता है, तो उसका प्रतिरोध स्वतः कमजोर पड़ने लगता है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया बेहद सीमित रही है। मानवाधिकारों की बात करने वाली वैश्विक संस्थाएँ और शक्तिशाली राष्ट्र चीन की आर्थिक ताकत और राजनीतिक प्रभाव के सामने अक्सर मौन दिखाई देते हैं। तीन दशकों तक एक धार्मिक नेता का सार्वजनिक जीवन से गायब रहना आधुनिक विश्व व्यवस्था की गंभीर नैतिक विफलता को उजागर करता है। ऐसे समय में भारत की भूमिका विशेष महत्व रखती है। पंचेन लामा का मुद्दा केवल तिब्बत तक सीमित नहीं है।

संपादकीय

सांप्रदायिक सद्भाव की कसौटी पर भोजशाला फैसला

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर खंडपीठ ने 15 मई 2026 को भोजशाला-कमाल मौला परिसर विवाद पर महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए पूरे परिसर को देवी वाग्देवी (सरस्वती) मंदिर माना है। न्यायालय ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की वैज्ञानिक रिपोर्ट और ऐतिहासिक अभिलेखों के आधार पर 2003 के उस आदेश को निरस्त कर दिया, जिसके तहत मुस्लिम समुदाय को शुक्रवार की नमाज की अनुमति दी गई थी।

फैसले के बाद हिंदू पक्ष को नियमित पूजा-अर्चना का अधिकार मिला है, जबकि मुस्लिम समुदाय के लिए वैकल्पिक भूमि उपलब्ध कराने की बात कही गई है। यह निर्णय केवल कानूनी विवाद का समाधान नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति और सामाजिक संवेदनशीलता से जुड़ा विषय भी है। भोजशाला का उल्लेख राजा भोज द्वारा स्थापित संस्कृत विद्यापीठ और सरस्वती मंदिर के रूप में लंबे समय से किया जाता रहा है। एएसआई की विस्तृत रिपोर्ट में मंदिर शैली की संरचनाएं, देवी-देवताओं की मूर्तियां, शिलालेख तथा अन्य पुरातात्विक प्रमाण मिलने का उल्लेख है। न्यायालय ने इन्हीं तथ्यों और निरंतर चली आ रही पूजा परंपरा को अपने निर्णय का आधार बनाया। भारत में धार्मिक स्थलों से जुड़े विवाद हमेशा संवेदनशील रहे हैं। अयोध्या प्रकरण के बाद यह दूसरा बड़ा मामला माना जा रहा है, जिसमें पुरातात्विक साक्ष्यों और ऐतिहासिक तथ्यों को विशेष महत्व मिला। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट, 1991 का उद्देश्य धार्मिक स्वरूप को बनाए रखना है, लेकिन जब किसी स्थल के मूल स्वरूप के संबंध में ठोस प्रमाण सामने आते हैं, तब न्यायालय उन तथ्यों की अनदेखी नहीं कर सकता। हालांकि, इस फैसले के बाद मुस्लिम पक्ष ने सुप्रीम कोर्ट जाने की बात कही है। यह उनका संवैधानिक अधिकार है और लोकतंत्र में हर पक्ष को न्यायिक प्रक्रिया अपनाने की स्वतंत्रता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पूरे विवाद को कानून और तथ्यों के दायरे में ही रखा जाए। अदालत द्वारा वैकल्पिक भूमि की पेशकश को भी सामाजिक संतुलन और सद्भाव बनाए रखने की कोशिश के रूप में देखा जाना चाहिए। फैसले के बाद धार जिले में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। प्रशासन की सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी प्रकार का तनाव या उन्माद पैदा न हो। राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों को भी संयमित भाषा का प्रयोग करना चाहिए। धार्मिक आस्था का सम्मान आवश्यक है, लेकिन उससे भी अधिक जरूरी सामाजिक शांति और पारस्परिक विश्वास है। भोजशाला केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रतीक भी मानी जाती है। राजा भोज के समय यह शिक्षा, दर्शन, कला और संस्कृत अध्ययन का प्रमुख केंद्र था। इसलिए इस स्थल का संरक्षण केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के रूप में भी महत्वपूर्ण है। सरकार और एएसआई को परिसर के संरक्षण, शोध और शांतिपूर्ण प्रबंधन पर गंभीरता से कार्य करना चाहिए। -राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

शिक्षा व्यवस्था का संकट

किशन सनमुखदास भावनानी

भारत में प्रतियोगी परीक्षाएं केवल रोजगार या प्रवेश का माध्यम नहीं, बल्कि करोड़ों युवाओं के सपनों, सामाजिक प्रतिष्ठा और भविष्य की दिशा तय करने वाली जीवनरेखा हैं। ऐसे में जब देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी 2026 पेपर लीक और अनियमितताओं के आरोपों में घिर गई, तो यह केवल परीक्षा प्रणाली पर नहीं, बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्न बन गया। सरकार ने परीक्षा रद्द कर 21 जून 2026 को दोबारा परीक्षा कराने की घोषणा की है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि वर्ष 2027 से नीट परीक्षा पूरी तरह कंप्यूटर आधारित यानी सीबीटी मोड में आयोजित होगी। 3 मई 2026 को आयोजित हुई परीक्षा के बाद सामने आए आरोपों ने छात्रों और अभिभावकों में भारी असंतोष पैदा किया। लाखों विद्यार्थियों की महीनों की मेहनत, मानसिक दबाव और आर्थिक निवेश अचानक अनिश्चितता में बदल गया। सोशल मीडिया पर विरोध, प्रदर्शन और पारदर्शिता की मांग ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की पारंपरिक परीक्षा व्यवस्था अब गहरे संकट से गुजर रही है। विडंबना यह है कि यह विवाद उस समय सामने आया जब सरकार ने 2024 में ''पब्लिक एग्जामिनेशंस (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट'' लागू किया था। इस कानून का उद्देश्य पेपर लीक, नकल, डिजिटल हैकिंग और परीक्षा धोखाधड़ी पर सख्त नियंत्रण स्थापित करना था। इसके बावजूद नीट-यूजी प्रकरण ने साबित किया कि केवल कानून बना देना पर्याप्त नहीं होता। यदि अपराधी नेटवर्क तकनीकी रूप से अधिक संगठित और सक्षम हों, तो वे प्रशासनिक कमजोरियों का लाभ उठा लेते हैं। आज का परीक्षा माफिया पारंपरिक अपराधियों तक सीमित नहीं रह गया है। यह एक संगठित नेटवर्क का रूप ले चुका है, जिसमें साइबर अपराधी, डेटा ब्रोकर, कोचिंग एजेंट, तकनीकी विशेषज्ञ और कई बार अंदरूनी तंत्र से जुड़े लोग तक शामिल पाए जाते हैं। ब्लूटूथ डिवाइस, माइक्रो ईयरपीस, एन्क्रिपेड मैसेजिंग और डिजिटल भुगतान माध्यमों के जरिए संगठित धोखाधड़ी को अंजाम दिया जा रहा है। यही कारण है कि प्रश्नपत्र लीक की घटनाएं अब स्थानीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय समस्या बन चुकी हैं। नीट विवाद के बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का भरोसा दिलाया। पुनर्परीक्षा में छात्रों को परीक्षा केंद्र शहर बदलने की सुविधा, अतिरिक्त समय और बिना अतिरिक्त शुल्क के परीक्षा देने की व्यवस्था की गई है। हालांकि बड़ा प्रश्न यह है कि क्या केवल पुनर्परीक्षा और सीबीटी मोड अपनाने से समस्या समाप्त हो जाएगी? सीबीटी प्रणाली निश्चित रूप से कई जोखिम कम कर सकती है। डिजिटल माध्यम से प्रश्नपत्र वितरण, अलग-अलग प्रश्न सेट, रियल टाइम मॉनिटरिंग और एआई आधारित निगरानी जैसी सुविधाएं पारदर्शिता बढ़ा सकती हैं। बैंकिंग और सरकारी भर्ती परीक्षाओं में इसका सफल उपयोग हो चुका है। लेकिन इसके साथ साइबर सुरक्षा, डेटा सुरक्षा और ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना की चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। इस पूरे संकट ने शिक्षा व्यवस्था के मूल ढांचे पर भी सवाल खड़े किए हैं। आज सफलता को केवल अंक, रैंक और कटऑफ से मापा जा रहा है। कोचिंग उद्योग करोड़ों का कारोबार बन चुका है और छात्रों पर मानसिक दबाव लगातार बढ़ रहा है। ऐसे माहौल में अनैतिक रास्तों का आकर्षण बढ़ना स्वाभाविक हो जाता है। नीट-यूजी 2026 विवाद केवल एक परीक्षा का संकट नहीं, बल्कि उस भरोसे की परीक्षा है जिस पर भारत का भविष्य टिका हुआ है।

शांति धारा के प्रभाव एवं महत्व पर ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित

प्रोफेसर अशोक कुमार जैन, वाराणसी की अध्यक्षता में हुआ आयोजन

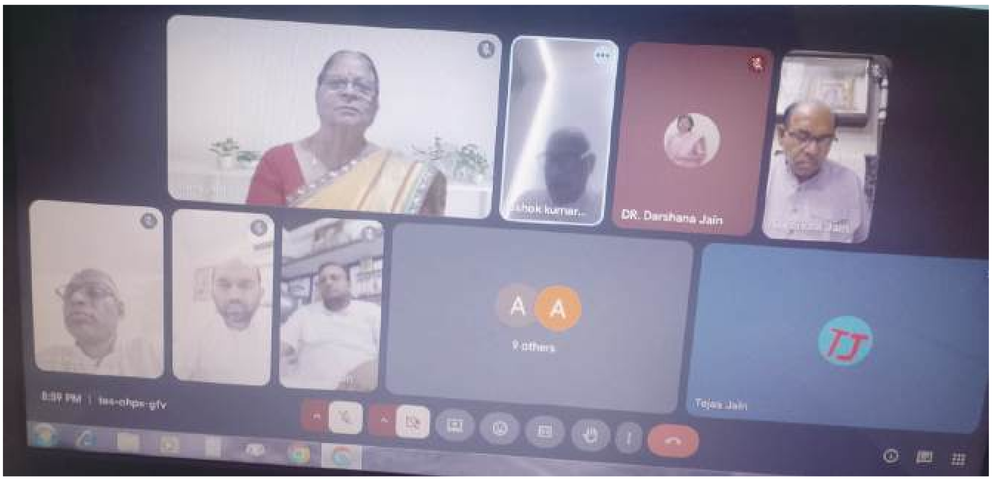

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी के पावन अवसर पर श्री अखिल भारतीय दिगंबर जैन विद्वत परिषद के तत्वावधान में ''शांति धारा का प्रभाव एवं उसका महत्व'' विषय पर एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रोफेसर अशोक कुमार जैन, वाराणसी ने की, जबकि कार्यक्रम का संयोजन डॉ. दर्शना जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री सुरेंद्र कुमार जैन, वाराणसी ने प्रस्तुत किया। ऑनलाइन आयोजित इस संगोष्ठी में मुख्य रूप से डॉ. सरोज जैन, नोएडा, ब्रह्मचारी डॉ. अनिल जैन, जयपुर तथा डॉ. सतीश जैन, जयपुर ने अपने विचार एवं आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. सरोज जैन ने अपने वक्तव्य में शांति धारा के आध्यात्मिक प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए भगवान शांतिनाथ एवं आचार्य शांतिसागर महाराज के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने कहा कि शांति धारा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि एवं मानसिक शांति का प्रभावी माध्यम है। डॉ. सतीश जैन ने बताया कि जैन परंपरा में लगभग 200 प्रकार की शांति धाराएं प्रचलित हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में परम पूज्य मुनि श्री सुधासागर जी महाराज ने शांति धारा के महत्व को व्यापक रूप से समाज के सामने प्रस्तुत किया है तथा इसके आध्यात्मिक एवं सामाजिक पक्ष को सरल भाषा में समझाया है। ब्रह्मचारी डॉ. अनिल जैन ने अपने वक्तव्य में पूज्य मुनि श्री शांतिसागर महाराज की जीवनचर्या, तप एवं छाणी समाधि से संबंधित महत्वपूर्ण प्रसंगों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आचार्य शांतिसागर महाराज का जीवन त्याग, तपस्या और साधना का प्रेरणास्त्रोत है। कार्यक्रम के अंत में श्री अखिल भारतीय दिगंबर जैन विद्वत परिषद के महामंत्री श्री संजीव जी ने सभी वक्ताओं एवं सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। यह जानकारी श्री अखिल भारतीय दिगंबर जैन विद्वत परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. सुरेंद्र कुमार जैन ''भारती'', बुरहानपुर द्वारा प्रदान की गई।

आज होगा बालाचार्य निपूर्ण नंदी महाराज एवं आर्यिका विज्ञा श्री संसंघ का भव्य संत समागम

इंसान को आगे बढ़ने के लिए खुद पर भरोसा होना चाहिए: आर्यिका विज्ञा श्री

साखना. शाबाश इंडिया। शांतिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र साखना में रविवार को बालाचार्य निपूर्ण नंदी महाराज संसंघ एवं गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री संसंघ का भव्य संत समागम आयोजित होगा। इस अवसर को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह एवं भक्तिभाव का वातावरण बना हुआ है। मीडिया प्रभारी राजेश अरिहंत ने बताया कि शनिवार को अतिशय क्षेत्र साखना में प्रातः भगवान शांतिनाथ, पार्श्वनाथ, शीतलनाथ एवं चंद्रप्रभु भगवान का अभिषेक एवं वृहद शांतिधारा सम्पन्न हुई। कार्यक्रम परम पूज्य गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री के मंगल सानिध्य एवं विद्वान पंडित रोविल जैन शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न कराया गया। इस दौरान ऋद्धि मंत्रों के उच्चारण के साथ भगवानों की विधिपूर्वक पूजा कर अर्घ्य एवं श्रीफल समर्पित किए गए। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि भारत गौरव गणिनी गुरु मां विज्ञा श्री ने अपने प्रवचनों में कहा कि मनुष्य को जीवन में आगे बढ़ने के लिए सबसे पहले स्वयं पर विश्वास करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति स्वयं पर भरोसा नहीं करता, वह दूसरों पर भी विश्वास नहीं कर सकता और उसका जीवन संदेहों से बोझिल हो जाता है। आर्यिका विज्ञा श्री ने कहा कि संदेहों से मुक्त रहने के लिए मन, मस्तिष्क, हृदय एवं विचारों को निर्मल और पवित्र रखना आवश्यक है। इसके लिए व्यक्ति को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखते हुए संयमित जीवन अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि बुरे दृश्य, बुरे शब्द और नकारात्मक विचार मनुष्य के मन को विचलित कर देते हैं, जिससे उसका मानसिक संतुलन प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति यह संकल्प ले कि वह न बुरा देखेगा, न बुरा सुनेगा और न बुरा बोलेगा, तो वह अपने विचारों एवं व्यक्तित्व को शुद्ध और सकारात्मक बना सकता है। प्रबंध समिति के अध्यक्ष प्रकाश सोनी एवं मंत्री प्यारचंद जैन ने जानकारी दी कि रविवार प्रातः बालाचार्य निपूर्ण नंदी महाराज संसंघ का ककोड़ से विहार होकर अतिशय क्षेत्र साखना में सुबह 7:15 बजे भव्य मंगल प्रवेश होगा।

मन और बुद्धि का संतुलन

मनुष्य का जीवन केवल शरीर से संचालित नहीं होता, बल्कि मन और बुद्धि के समन्वय से दिशा प्राप्त करता है। मन भावनाओं, इच्छाओं और संवेदनाओं का केंद्र है, जबकि बुद्धि सही और गलत का निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। जब मन और बुद्धि के बीच संतुलन बना रहता है, तब जीवन सुखमय, शांत और सफल बनता है। लेकिन जब मन भावनाओं में बह जाता है और बुद्धि का विवेक कमजोर पड़ जाता है, तब व्यक्ति अनेक समस्याओं और उलझनों में घिर जाता है। मन स्वभाव से चंचल होता है। वह कभी प्रसन्नता में अत्यधिक उत्साहित हो जाता है तो कभी दुख और निराशा में टूट जाता है। इसके विपरीत बुद्धि स्थिरता, विवेक और धैर्य का प्रतीक है। बुद्धि व्यक्ति को सोच-समझकर निर्णय लेने की प्रेरणा देती है। यदि मनुष्य केवल मन की सुनता है, तो वह भावनाओं के प्रभाव में आकर गलत निर्णय ले सकता है। वहीं यदि केवल बुद्धि का अनुसरण किया जाए, तो जीवन कठोर और नीरस बन सकता है। इसलिए जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने के लिए मन और बुद्धि दोनों का सामंजस्य आवश्यक है। आज के आधुनिक युग में यह संतुलन और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। प्रतियोगिता, तनाव, सोशल मीडिया और भौतिक इच्छाओं ने मनुष्य के मन को अस्थिर बना दिया है। ऐसे समय में बुद्धि का मार्गदर्शन व्यक्ति को संयम, धैर्य और सही दिशा प्रदान करता है, जबकि संवेदनशील मन मानवता, प्रेम और करुणा को जीवित रखता है। वास्तव में जीवन की सुंदरता इन्हीं दोनों के संतुलन में निहित है। मन और बुद्धि का संतुलन बनाए रखने के लिए योग, ध्यान, सकारात्मक चिंतन और आत्ममंथन अत्यंत उपयोगी उपाय हैं। अच्छे साहित्य का अध्ययन, सत्संग तथा अनुभवी लोगों का मार्गदर्शन भी मानसिक स्थिरता प्रदान करता है। जब व्यक्ति अपनी भावनाओं को बुद्धि के विवेक से नियंत्रित करना सीख जाता है, तब वह कठिन परिस्थितियों में भी शांत, संयमित और संतुलित बना रहता है। अंततः मन और बुद्धि जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं। केवल भावनाएं या केवल तर्क जीवन को पूर्ण नहीं बना सकते। सफलता, शांति और आनंद उसी व्यक्ति को प्राप्त होते हैं, जो अपने मन की संवेदनाओं और बुद्धि के विवेक के बीच उचित संतुलन बनाए रखता है। यही संतुलन जीवन को सुंदर, सार्थक और सफल बनाता है।

अनिल माथुरः ज्वाला विहार, जोधपुर

13 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर

शाबाश इंडिया प्रस्तुत करता है

दैनिक ई–पेपर, साप्ताहिक एवं पाक्षिक समाचार पत्र

Soulful Melodies

Musical Night

श्री संजय रायजादा
अन्तर्राष्ट्रीय गायक
(ए.बी.सी.एल. फेम)

डॉ. गौरव जैन
अन्तर्राष्ट्रीय गायक
(ए.आर. रहमान फेम)

श्री राकेश कुमार
अन्तर्राष्ट्रीय गायक

श्रीमती दीपशिखा जैन
प्रसिद्ध गायिका
(सोनी टीवी गुरूकुल फेम)

श्रीमती नेहा जैन
प्रसिद्ध गायिका

श्रीमती समता गोदिका
प्रसिद्ध गायिका

रविवार, 24 मई 2026
समय : सायं 7:00 बजे से

स्थान : वर्धमान सभागार
श्री महावीर स्कुल, सी–स्कीम, जयपुर

स्थापना दिवस विशेषांक का विमोचन

विमोचनकर्त्ता :
श्रीमान् सुरेन्द्र जी पाण्ड्या
प्रमुख समाज सेवी

यू–ट्यूब चैनल का भव्य शुभारम्भ

उद्घाटनकर्त्ता :
डॉ. पी. सी. जैन
प्रमुख समाज सेवी

प्रतिभा सम्मान

श्रीमान् सौरभ जैन
10 WORLD RECORD HOLDER
(Motivational Speaker)

सम्मानीय अतिथिगण

समारोह गौरव
श्रीमान् नन्द किशोर जी प्रमोद जी पहाड़िया
ए.आर.एल. ग्रुप

अध्यक्षता
श्रीमान् सुधांशु जी कासलीवाल
अध्यक्ष–अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी

मुख्य अतिथि
श्रीमान् उमराव मल जी संघी
अध्यक्ष–श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद्

दीप प्रज्जवलनकर्त्ता
श्रीमान् महेश जी काला
अध्यक्ष–वीर सेवक मण्डल

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् शैलेन्द्र जी गोधा
सम्पादक–दैनिक समाचार जगत

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् जे.के. जैन (कालाडेरा वाले)
अध्यक्ष–नेमीनाथ दिगम्बर जैन समाज समीति

विशिष्ट अतिथि
इंजी. डी.एम. जैन
रिर्टा. चीफ इंजीनियर

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् पदम जी बीलाला
प्रमुख समाजसेवी

विशिष्ट अतिथि
श्रीमान् मनीष जी लोंग्या
प्रमुख समाजसेवी

आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : **राकेश जैन गोदिका** (प्रधान संपादक) – **समता गोदिका**
राजेश – अंजना गोदिका ✲ दिनेश – मीतू गोदिका ✲ राज – एस.के. जैन ✲ सक्षम – आरूषी गोदिका
रचिता – सिद्धार्थ खूटेंटा ✲ अद्धिता, रितिशा खूटेंटा एवं समस्त शाबाश इंडिया परिवार

FORNIGHTLY : RAJHIN/2013/50192 Since : 2013 WEEKLY : RAJHIN/2013/53754

शाबाश इंडिया

दैनिक ई-पेपर, साप्ताहिक एवं पाक्षिक समाचार पत्र

shabaasindia.com YouTube SHABAASH INDIA NEWS rakeshgodika@gmail.com shabaasindia@gmail.com

कार्यालय : प्लॉट नं. 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड़, टोंक रोड़, जयपुर ✲ मो. 9414078380, 9214078380

Printed by : VARDHMAN PRINTERS # 9314263204

ग्रीष्मकालीन संस्कार शिक्षण शिविर का शुभारंभ

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर
एवं
अखिल भारतीय श्रमण संस्कृति महिला महासमिति, भारत

जयपुर. शाबाश इंडिया। महल योजना स्थित श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर में अपार श्रद्धा, उत्साह एवं धार्मिक वातावरण के बीच ग्रीष्मकालीन संस्कार शिक्षण शिविर का भव्य शुभारंभ हुआ। 11 दिवसीय इस शिविर का आयोजन भारतीय श्रमण संस्कृति, अहिंसा, नैतिक मूल्यों एवं आदर्श जीवन शैली को बच्चों के जीवन में संस्कार स्वरूप स्थापित करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। शिविर के उद्घाटन अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु, अभिभावक एवं बालक-बालिकाएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम में धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को संस्कार, अनुशासन एवं भारतीय संस्कृति की शिक्षाएं प्रदान करने पर विशेष जोर दिया गया। इस अवसर पर परम संरक्षक निर्मला मुकेश संघी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कारमयी एवं समृद्ध भविष्य के निर्माण के लिए केवल बच्चों ही नहीं, बल्कि बड़ों की भी सक्रिय एवं सकारात्मक सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने कहा कि परिवार और समाज मिलकर बच्चों में नैतिकता, संयम और संस्कृति के बीज बो सकते हैं, जिससे एक सशक्त एवं संस्कारित पीढ़ी का निर्माण संभव होगा। शिविर के दौरान बच्चों को धार्मिक ज्ञान, प्रार्थना, नैतिक शिक्षा, योग, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं व्यक्तित्व विकास से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षित किया जाएगा। कार्यक्रम का वातावरण भक्तिमय एवं प्रेरणादायी रहा।

निवाई के सभी जिनालयों में मनाया गया भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव

गाजे-बाजे के साथ चढ़ाए गए निर्वाण लाडू

निवाई. शाबाश इंडिया

सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में दिगम्बर जैन नसियां मंदिर, बिचला जैन मंदिर सहित शहर के सभी जिनालयों में जैन धर्म के 16वें तीर्थंकर भगवान श्री शांतिनाथ जी का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा भगवान शांतिनाथ जी के निर्वाण लाडू गाजे-बाजे के साथ चढ़ाए गए। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला ने बताया कि नसियां जैन मंदिर में विधानाचार्य अशोक जैन के सानिध्य में भगवान शांतिनाथ जी का विधिवत अभिषेक एवं शांतिधारा सम्पन्न हुई। मंत्रोच्चार के बीच श्रद्धालुओं ने पूजा-अर्चना कर भगवान के मोक्ष कल्याणक दिवस पर निर्वाण लाडू अर्पित किए। कार्यक्रम में जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा, समाजसेवी गोपाल लाल शंभू कठमाणा, अग्रवाल समाज चौरासी संरक्षक हुकमचंद पारसमल जैन प्रेस वाले, अग्रवाल समाज चौरासी युवा अध्यक्ष महेंद्र चंवरिया, दिगम्बर जैन अग्रवाल समाज अध्यक्ष विष्णु बोहरा, सुनील भाणजा, नगरपालिका उपाध्यक्ष जितेंद्र चंवरिया, उद्योगपति अशोक कुमार अमित कटारिया, राजकुमार संधी, राजेंद्र सेदरिया, सुनील चेनपुरा, सरावगी समाज कोषाध्यक्ष महावीर प्रसाद छाबड़ा, युवा परिषद अध्यक्ष सुशील गिन्दोडी, पवन बोहरा, महेंद्र सारसोप, अशोक सिरस, धर्मचंद नेहरू, ज्ञानचंद चंवरिया, दिनेश चंवरिया, चेतन शिवाड़, अजय जैन, हितेश छाबड़ा एवं प्रिंस छाबड़ा सहित अनेक श्रद्धालुओं ने भगवान के समक्ष श्रीफल एवं अर्घ्य समर्पित किए।

धार की यक्षिणी अंबिका: जैन विरासत और ऐतिहासिक साक्ष्यों की प्रमाणिकता

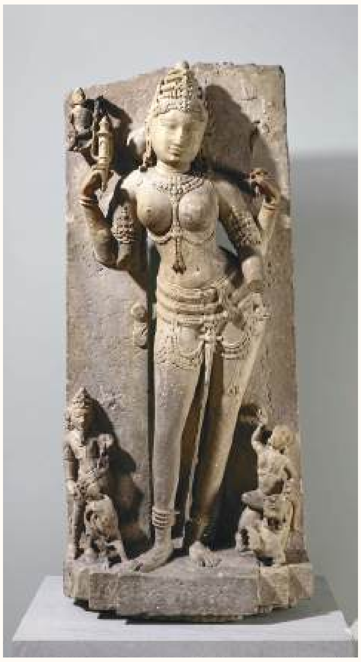

राज पाटनी, लाडनूं

इतिहास केवल कथाओं का संग्रह नहीं होता, बल्कि पुरातत्व, शिलालेखों और सांस्कृतिक धरोहरों के रूप में सुरक्षित वे प्रमाण होते हैं, जो समय की धूल हटाकर सत्य को सामने लाते हैं। मध्यप्रदेश के धार (प्राचीन धारा नगरी) से प्राप्त और वर्तमान में ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन में सुरक्षित जैन यक्षिणी अंबिका की प्रतिमा इसी ऐतिहासिक सत्य का महत्वपूर्ण उदाहरण है। श्वेत संगमरमर से निर्मित यह प्रतिमा, उस पर अंकित संवत 1091 (1034 ईस्वी) का शिलालेख तथा संग्रहालय का आधिकारिक विवरण जैन धर्म की प्राचीनता, कलात्मक समृद्धि और सांस्कृतिक योगदान को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। ब्रिटिश संग्रहालय के आधिकारिक अभिलेखों के अनुसार यह प्रतिमा जैन यक्षिणी अंबिका की खड़ी प्रतिमा है, जिसे सफेद संगमरमर पर उच्च कोटि की नक्काशी के साथ निर्मित किया गया है। देवी मूल रूप से चतुभुर्जी थीं, हालांकि समय के प्रभाव से उनकी दो भुजाएं खंडित हो चुकी हैं। प्रतिमा में देवी बहुस्तरीय मुकुट धारण किए हुए हैं तथा उनके बाल विशेष शैली में बंधे हुए दर्शाए गए हैं। शेष सुरक्षित भुजाओं में अंकुश एवं एक फंदे अथवा पौधे की डंठल जैसा प्रतीक दिखाई देता है। प्रतिमा के आधार पर अंकित शिलालेख इस धरोहर को और अधिक महत्वपूर्ण बना देता है। संस्कृत भाषा एवं देवनागरी लिपि में अंकित इस लेख में परमार वंश के प्रतापी राजा भोज के काल का उल्लेख मिलता है। शिलालेख के अनुसार वररुचि नामक व्यक्ति, जो चंद्रनगरी एवं विद्याधरी जैन गच्छों से संबंधित थे, ने पहले माता वाग्देवी तथा तीन जिन प्रतिमाओं का निर्माण कराया और उसके पश्चात अंबिका देवी की इस सुंदर प्रतिमा की स्थापना करवाई। शिल्पकार मणथल तथा लेखक शिवदेव के नाम का उल्लेख भी इसमें किया गया है। यह शिलालेख कई ऐतिहासिक तथ्यों को स्पष्ट करता है। प्रथम, राजा भोज के काल में जैन धर्म को महत्वपूर्ण संरक्षण प्राप्त था। द्वितीय, धार क्षेत्र में जैन धर्म का संगठित और समृद्ध धार्मिक केंद्र विद्यमान था, जहां तीर्थंकरों एवं देवी-देवताओं की प्रतिमाओं का निर्माण कराया गया। तृतीय, उस समय कला, शिल्प और धार्मिक परंपराओं का विकास व्यवस्थित रूप से हो रहा था। विशेष महत्व की बात यह है कि ब्रिटिश संग्रहालय जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थान द्वारा इस प्रतिमा को ''जैन यक्षिणी अंबिका'' के रूप में आधिकारिक मान्यता दी गई है। यह तथ्य जैन समाज की ऐतिहासिक विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रमाणिकता प्रदान करता है। साथ ही शिलालेख में 'तीन जिनों' का स्पष्ट उल्लेख यह सिद्ध करता है कि ग्यारहवीं शताब्दी में धारा नगरी जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र थी। धार की यह यक्षिणी अंबिका प्रतिमा केवल एक कलात्मक धरोहर नहीं, बल्कि जैन समाज के सांस्कृतिक इतिहास का जीवंत दस्तावेज है। यह हमें स्मरण कराती है कि भारत की प्राचीन सभ्यता केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि कलात्मक, बौद्धिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध रही है। ऐसे ऐतिहासिक साक्ष्यों का संरक्षण और अध्ययन हमारी सांस्कृतिक चेतना को मजबूत बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

> ब्रिटिश संग्रहालय के आधिकारिक अभिलेखों के अनुसार यह प्रतिमा जैन यक्षिणी अंबिका की खड़ी प्रतिमा है, जिसे सफेद संगमरमर पर उच्च कोटि की नक्काशी के साथ निर्मित किया गया है। देवी मूल रूप से चतुभुर्जी थीं, हालांकि समय के प्रभाव से उनकी दो भुजाएं खंडित हो चुकी हैं।

श्राविका शिरोमणि सुशीला पाटनी का बालिका छात्रावास में मनाया जन्मदिवस

किशनगढ़. शाबाश इंडिया। संत श्री सुधासागर बालिका छात्रावास में छात्रावास की परामर्शक व्रती श्राविका शिरोमणि सुशीला अशोक पाटनी, किशनगढ़ का जन्मदिवस बालिकाओं द्वारा सादगी एवं श्रद्धाभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर छात्रावास की बालिकाओं ने उन्हें शुभकामनाएं एवं मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। कार्यक्रम में छात्रावास अधिष्ठात्री शीला जैन ड्योडा, निदेशिका डॉ. वंदना जैन सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। साथ ही ज्ञानूजी, शकुंतला, अंतिमा, रेखा, सुनीता, संध्या, अलका प्रीतिदीदी एवं अन्य सहयोगियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सादा एवं प्रेरणादायी वातावरण में आयोजित इस समारोह में बालिकाओं ने अपने स्नेह और सम्मान का भाव व्यक्त किया। इस अवसर पर सुशीला पाटनी ने भावुक उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका भाव केवल जन्मदिन मनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि गुरुजनों के आशीर्वाद से ऐसा जीवन जीने का है कि भविष्य में उनकी भी जन्म जयंती प्रेरणास्वरूप मनाई जाए। उनके प्रेरणादायी विचारों ने उपस्थित सभी जनों को भावविभोर कर दिया। समारोह आत्मीयता, संस्कार और श्रद्धा के वातावरण में संपन्न हुआ।

शनि अमावस्या पर हुई दिव्य आराधना

जयपुर. शाबाश इंडिया। शनिवार को शनि अमावस्या, बड़ी अमावस्या एवं शनिदेव जयंती के परम पावन अवसर पर जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम में दैविक संकेतों द्वारा भूगर्भ से अवतरित शनि ग्रह अरिष्ट निवारक भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की अति प्राचीन एवं चमत्कारिक प्रतिमा का अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और दिव्य भावनाओं के साथ अभिषेक एवं शांतिधारा सम्पन्न हुई। प्रातःकाल से ही सम्पूर्ण तीर्थ परिसर भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत हो उठा। भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी के जयघोष, मंत्रोच्चार एवं आराधना की दिव्य ध्वनियों से वातावरण अलौकिक बन गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं देव शक्तियाँ इस पुण्य अवसर की साक्षी बन रही हों। अभिषेक की प्रत्येक पावन धारा श्रद्धा, समर्पण और आत्मशुद्धि का संदेश दे रही थी। भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी के चरणों में सम्पन्न शांतिधारा एवं विशेष आराधना ने सम्पूर्ण वातावरण को अद्भुत शांति, सकारात्मक ऊर्जा एवं आत्मिक आनंद से भर दिया। भक्तिभाव में लीन श्रद्धालुओं के चेहरों पर आस्था की आभा स्पष्ट दिखाई दे रही थी। श्रद्धालुओं ने प्रभु चरणों में नमन कर आत्मिक शांति एवं दिव्य अनुभूति का अनुभव किया। मान्यता है कि भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की सच्चे मन से की गई आराधना शनि ग्रह से संबंधित बाधाओं, कष्टों एवं अरिष्टों को शांत कर जीवन में सुख, शांति, आत्मबल और मंगलमय ऊर्जा का संचार करती है।

शनि अमावस्या पर श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पंचामृत अभिषेक संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। शनि अमावस्या के पावन अवसर पर श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कल्याण नगर टोंक रोड में श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ पंचामृत अभिषेक का आयोजन किया गया। इस धार्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर धर्म लाभ प्राप्त किया। मंदिर परिसर में भक्तिमय वातावरण के बीच श्रद्धालुओं ने भगवान के अभिषेक एवं पूजन में भाग लेकर पुण्यार्जन किया। कार्यक्रम के दौरान मंदिर में आध्यात्मिक उल्लास एवं भक्तिभाव का वातावरण बना रहा। यह जानकारी मंदिर मंत्री दिनेश धाडूका द्वारा दी गई।

शांतिनाथ भगवान के जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव पर सोलह स्वप्नों का भव्य मंचन

भगवान को पालना झुलाकर मनाया गया जन्मोत्सव

रामगंजमंडी. शाबाश इंडिया

मूलनायक भगवान श्री 1008 शांतिनाथ भगवान का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक महोत्सव शुक्रवार को रामगंजमंडी में श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन पाठशाला द्वारा आयोजित सांस्कृतिक संध्या में भव्य एवं मनमोहक प्रस्तुतियों ने सभी श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती निर्मला सुरलाया द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुति के साथ हुआ। इसके पश्चात नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत ''दिव्य स्वरूप विराजे जय शांतिनाथ भगवान'' की आकर्षक प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। इसके बाद इंद्र दरबार का मंचन किया गया, जिसमें भगवान के जन्म की सूचना प्रसारित होने एवं महाराजा विश्वसेन के दरबार में उल्लासपूर्वक उत्सव मनाने का दृश्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के दौरान भावुक क्षण तब देखने को मिले जब शची इंद्राणी तीर्थंकर बालक को गोद में लेकर आनंद एवं उल्लास के साथ नृत्य करने लगीं। यह दृश्य अत्यंत भावविह्वल और भक्तिमय रहा। इसके उपरांत दिव्य एवं अलौकिक शैली में सोलह स्वप्नों का मंचन किया गया। नाटकीय रूपांतरण के माध्यम से प्रत्येक स्वप्न का धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व भी समझाया गया, जिसे श्रद्धालुओं ने अत्यंत सराहा। सांस्कृतिक प्रस्तुति में सोधर्म इंद्र द्वारा प्रस्तुत तांडव नृत्य विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। उनकी प्रस्तुति ने सम्पूर्ण वातावरण को अलौकिक बना दिया। आयोजन में महाराजा विश्वसेन एवं माता ऐरा देवी की भूमिका श्रीमान नीरज जैन एवं निधि जैन ने निभाई। वहीं सोधर्म इंद्र एवं शची इंद्राणी बनने का सौभाग्य प्रदीप कुमार एवं रेखा जैन शाह को प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण वातावरण भक्ति एवं उल्लास से परिपूर्ण रहा। जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर भगवान शांतिनाथ को पालना झुलाया गया तथा श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव के साथ प्रभु के जन्मोत्सव की खुशियां मनाईं।

सांस्कृतिक संध्या का संचालन प्रशांत जैन आचार्य ने किया। कार्यक्रम में प्रस्तुत प्रेरणादायक एवं धार्मिक प्रस्तुतियों को सभी श्रद्धालुओं ने सराहा। इससे पूर्व प्रातःकालीन बेला में परम पूज्य मुनि श्री 108 निष्पक्ष सागर महाराज एवं परम पूज्य मुनि श्री 108 निस्पृह सागर महाराज के सानिध्य में भगवान शांतिनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा सम्पन्न हुई। श्रद्धालुओं ने भगवान को निर्वाण लाडू समर्पित कर पुण्य लाभ अर्जित किया।

रिपोर्ट : अभिषेक जैन लुहाड़िया, रामगंजमंडी
मोबाइल : 9929747312

विश्व उच्च रक्तचाप दिवस पर विशेष

''साइलेंट किलर'' है हाई ब्लड प्रेशर, सजगता ही सबसे बड़ा बचाव

वाराणसी. शाबाश इंडिया

प्रत्येक वर्ष 17 मई को ''विश्व उच्च रक्तचाप दिवस'' (वर्ल्ड हाइपरटेंशन डे) मनाया जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को हाई ब्लड प्रेशर यानी उच्च रक्तचाप के खतरों और उससे बचाव के प्रति जागरूक करना है। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार उच्च रक्तचाप को ''साइलेंट किलर'' कहा जाता है, क्योंकि इसके शुरूआती लक्षण अक्सर स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते, लेकिन यह धीरे-धीरे शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान पहुंचाता रहता है। विशेषज्ञों का कहना है कि संतुलित खान-पान, नियमित व्यायाम, तनाव नियंत्रण और भोजन में नमक की सीमित मात्रा अपनाकर इस गंभीर बीमारी से काफी हद तक बचाव संभव है।

गर्मियों में गर्भावस्था के दौरान हाइपरटेंशन बन रहा चुनौती

वर्तमान समय में गर्भवती महिलाओं में उच्च रक्तचाप की समस्या तेजी से बढ़ती स्वास्थ्य चिंताओं में शामिल हो गई है। विशेष रूप से गर्मियों के मौसम में अत्यधिक तापमान, थकान और शरीर में पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) के कारण रक्तचाप अचानक बढ़ सकता है, जो मां और गर्भस्थ शिशु दोनों के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

इन लक्षणों को बिल्कुल नजरअंदाज न करें

गर्भावस्था के दौरान उच्च रक्तचाप होने पर निम्नलिखित लक्षण दिखाई दे सकते हैं–

सिर में लगातार तेज दर्द होना
आंखों के सामने धुंधलापन या देखने में परेशानी
चेहरे, हाथों और पैरों में अत्यधिक सूजन आना
बिना स्पष्ट कारण के तेजी से वजन बढ़ना

चक्कर आना, घबराहट और सांस लेने में तकलीफ होना।

चिकित्सकों के अनुसार यदि समय रहते इन लक्षणों की पहचान कर उपचार शुरू नहीं किया जाए, तो यह स्थिति ''प्री-एक्लेमप्सिया'' का रूप ले सकती है, जिससे प्रसव के दौरान मां और शिशु दोनों के जीवन को खतरा हो सकता है।

गर्भवती महिलाओं के लिए बचाव के मुख्य उपाय

हाइड्रेशन का रखें विशेष ध्यान

दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी, नारियल पानी और नींबू पानी का सेवन करें, ताकि शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स का संतुलन बना रहे।

वर्तमान समय में गर्भवती महिलाओं में उच्च रक्तचाप की समस्या तेजी से बढ़ती स्वास्थ्य चिंताओं में शामिल हो गई है। विशेष रूप से गर्मियों के मौसम में अत्यधिक तापमान, थकान और शरीर में पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) के कारण रक्तचाप अचानक बढ़ सकता है, जो मां और गर्भस्थ शिशु दोनों के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

धूप और लू से बचें

दोपहर के समय तेज धूप में बाहर निकलने से बचें। हल्के रंग के सूती और आरामदायक कपड़े पहनें।

खान-पान में रखें सावधानी

भोजन में नमक की मात्रा सीमित रखें। पैकेट बंद खाद्य पदार्थ, अत्यधिक तेल-मसाले और तली-भुनी चीजों से परहेज करें।

संतुलित दिनचर्या अपनाएं

हरी पत्तेदार सब्जियां, ताजे फल और डेयरी उत्पादों को आहार में शामिल करें। चिकित्सकीय सलाह के अनुसार हल्का व्यायाम या योग करें तथा पर्याप्त आराम लें।

नियमित जांच कराएं

गर्भावस्था के दौरान नियमित रूप से ब्लड प्रेशर की जांच कराते रहें। किसी भी असामान्य लक्षण के दिखाई देने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

विशेषज्ञों का मानना है कि समय पर जांच, संतुलित जीवनशैली और जागरूकता के माध्यम से उच्च रक्तचाप जैसी गंभीर समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है। जागरूकता ही इस ''साइलेंट किलर'' से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है।

श्री गोवर्धननाथ जी मंदिर में भागवत, श्रीगोवर्धन नाथ व मथुराधीश प्रभु के दर्षन व 56 भोग महोत्सव आज से, होर्डिंग का विमोचन

आज निकलेगी श्री मथुराधीश प्रभु की भव्य शोभायात्रा

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंडल व श्री वल्लभ पुष्टिमार्गीय मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में अधिकमास के अवसर पर 11 दिवसीय श्रीमद भागवत एकादश व मूल श्लोकों के परायण व श्रीगोवर्धन नाथ व मथुराधीश प्रभु के दर्शन व 56 भोग महोत्सव रविवार से शरू होगा। 28 मई तक चलने वाले इस महोत्सव का शुभारंभ रविवार को साम 5 बजे श्री सिद्ध विनायक मंदिर से निकलने वाली श्री मथुराधीश प्रभु की भव्य शोभायात्रा से होगा।इससे पूर्व आज इस आयोजन के होर्डिंग का विमोचन आज आयोजन समिति के नारायण लाल अग्रवाल,गोविन्द मालपानी,सोहन लाल अग्रवाल टुकड़ेवाला,लक्ष्मण,ओम प्रकाश मांधना,सरोज चावला,राम सहाय मांधना,सुनील कपूर,संजय बांगड़,भरत मालपानी व प्रमोद कोटेवाला, गोवर्धन भगत व रेखा भगत सहित अन्य पदाधिकारियों ने किया। आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए श्री पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंडल के अध्यक्ष गोविन्द मालपानी व कोषाध्यक्ष सोहन लाल अग्रवाल टुकड़ेवाला ने बताया कि आयोजन का शुभारंभ रविवार को साम 5 बजे सूरजपोल स्थित श्री सिद्ध विनायक मंदिर से निकलने वाली श्री मथुराधीश प्रभु की शोभायात्रा से होगा।इस दौरान बैंड वादकों की मधुर स्वर लहरियों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर नाचते-गाते चलेंगे।यह शोभायात्रा श्री सिद्ध विनायक मंदिर से शुरू होगी,जो विभिन्न मार्गों से होती हुई श्री श्री गोवर्धननाथ जी मंदिर पहुंच कर समाप्त होगी।

भागवत सुनाएंगे गिरिराज शास्त्री

उन्होंने बताया कि 18 से 28 मई तक तक रोजाना बड़ोदा के गिरिराज जी शास्त्री कथा सुनाएंगे। जो रोजाना सुबह 10 से दोपहर 1बजे तक व साम को 4 बजे से साम 7 बजे तक श्रीमद भागवत प्रदत्त दृष्टिकोणों के माध्यम से वर्तमान जीवन शैली के आध्यात्मिक उत्थान व सिद्धांतों के बारे में बताएंगे।इस दौरान भागवत के रोजाना मूल श्लोंकों का पाठ सुबह 6 बजे से सुबह 9.30 बजे तक व दोपहर 1बजे से साम 4 बजे तक होंगे।

भगवान शांतिनाथ जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक पर्व श्रद्धाभाव से मनाया गया

अजीत कोठिया डडूका, बांसवाड़ा (राजस्थान) की रिपोर्ट

दिगंबर जैन पाठशाला डडूका के बच्चों द्वारा जैन धर्म के 16वें तीर्थंकर भगवान श्री 1008 शांतिनाथ जी का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक पर्व पारंपरिक श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रातःकाल बच्चों ने जिनालय में भगवान शांतिनाथ जी का विधिपूर्वक जलाभिषेक कर पूजा-अर्चना की तथा धर्म लाभ प्राप्त किया। सम्पूर्ण वातावरण भक्तिमय एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत रहा। शाम के समय पाठशाला परिसर में पाठशाला प्रेरकों के सानिध्य में भगवान शांतिनाथ जी के तीनों कल्याणकों पर आधारित रोचक प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों को तीर्थंकरों के पांचों कल्याणकों से संबंधित महत्वपूर्ण एवं मंगलमय जानकारियां भी साझा की गईं। इस अवसर पर बच्चों को आगामी 1 जून से 5 जून 2026 तक आयोजित होने वाली ग्रीष्मकालीन वार्षिक परीक्षाओं की जानकारी भी प्रदान की गई। आयोजन में कुल 22 नौनिहालों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम धार्मिक संस्कार, ज्ञानवर्धन एवं प्रेरणादायी वातावरण में सम्पन्न हुआ।

कल 108 वाहनों से बहादुरपुर जाएंगे श्रद्धालु, मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज को करेंगे श्रीफल भेंट

गांव मंदिर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियां तेज

विजय धुर्रा. अशोकनगर

सुप्रसिद्ध जैनाचार्य, परम पूज्य आध्यात्मिक संत निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज के चरणों में गांव मंदिर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु निवेदन करने के लिए श्री दिगंबर जैन पंचायत कमेटी, अशोकनगर के पदाधिकारी बहादुरपुर पहुंचे।

प्रतिनिधिमंडल ने मुनि श्री को श्रीफल भेंट कर गांव मंदिर में चल रहे निर्माण एवं वेदी प्रतिष्ठा कार्यों की प्रगति से अवगत कराया। प्रतिनिधिमंडल में पंचायत कमेटी के अध्यक्ष राकेश कांसल, महामंत्री राकेश अमरोद, कोषाध्यक्ष सुनील अखाई एवं संयोजक मनीष सिंघई सहित अन्य पदाधिकारी शामिल रहे। सभी ने मुनि श्री से गांव मंदिर वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव में सानिध्य प्रदान करने का विनम्र निवेदन किया। जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने बताया कि शहर के सबसे प्राचीन गांव मंदिर की वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर समाज में विशेष उत्साह है। उन्होंने कहा कि सकल जैन समाज के प्रत्येक परिवार की सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रविवार, 17 मई को प्रातः 6 बजे बहादुरपुर के लिए विशेष यात्रा निकाली जाएगी। इस यात्रा में 21 निशुल्क बसों एवं 108 वाहनों के माध्यम से श्रद्धालु बहादुरपुर पहुंचकर गुरु चरणों में अपनी भावनाएं अर्पित करेंगे। महामंत्री राकेश अमरोद ने कहा कि यदि महिला मंडल की आवश्यकता रही तो उनके लिए अलग से वाहन व्यवस्था भी की जाएगी। वहीं कोषाध्यक्ष सुनील अखाई ने कहा कि महिला मंडलों, युवा वर्ग एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से इस यात्रा को ऐतिहासिक एवं यादगार बनाया जाएगा। कमेटी के मंत्री शैलेन्द्र श्रागर ने बताया कि 21 बसों की व्यवस्था समाज के दानदाताओं के सहयोग से की गई है और आवश्यकता पड़ने पर इसे और विस्तारित किया जा सकता है। उपाध्यक्ष अजीत बरोदिया ने कहा कि जैन मिलन समन्वय ग्रुप, जैन युवा वर्ग एवं जैन जागृति मंडल के मध्य कार्य विभाजन कर यात्रा को सुव्यवस्थित एवं सफल बनाया जाएगा। बैठक में पंचायत कमेटी के सदस्य नवीन सर, नीलेश टिकल, नितिन बज, हेमंत टडैया, अविनाश भोला, अक्षय अमरोद, नीलेश बड़कुल सहित अनेक समाजजन उपस्थित रहे और सभी ने आयोजन को सफल बनाने के लिए अपने सुझाव एवं सहयोग का आश्वासन दिया।

पावापुरी में मुमुक्षु हर्षितकुमार संघवी को प्रदान हुआ दीक्षा मुहूर्त

27 जून को सिरोड़ी में होगी दीक्षा

भीनमाल, जालोर. शाबाश इंडिया। निकटवर्ती ग्राम सिरोड़ी निवासी मुमुक्षु हर्षितकुमार संघवी अपनी दीक्षा का मुहूर्त लेने हेतु पावापुरी तीर्थ जीव मैत्रीधाम पहुंचे, जहां उनका मुख्य द्वार पर ढोल-नगाड़ों एवं गाजे-बाजे के साथ भव्य स्वागत किया गया। श्रद्धालुओं ने अक्षतों से वधावणा कर हर्षोल्लास के साथ उनका अभिनंदन किया। उपाश्रय में सूरिमंत्र समाराधक आचार्य रविरत्नसूरीश्वर एवं जयेशरत्नसूरीश्वर म.सा., पंन्यास वैराग्यरत्नविजय सहित अनेक साधु-साध्वियों की शुभ निश्रा में सिरोड़ी निवासी 30 वर्षीय मुमुक्षु हर्षितकुमार जितेंद्रभाई संघवी को दीक्षा का मंगल मुहूर्त प्रदान किया गया। दीक्षा मुहूर्त की घोषणा आचार्य कलापूर्णसूरीश्वर म.सा. के शिष्य आचार्य पूर्णचंद्रसूरीश्वर म.सा. ने मंगल आशीर्वाद के साथ की। उन्होंने बताया कि मुमुक्षु हर्षितकुमार संघवी की दीक्षा आगामी 27 जून को शुभ मुहूर्त में सम्पन्न होगी। मुहूर्त पत्र मिलने पर श्रद्धालुओं द्वारा कंकु एवं अक्षतों से वधावणा की गई। इस अवसर पर भक्ति एवं उल्लास का वातावरण बन गया और संगीत की मधुर धुनों पर मुमुक्षु हर्षितकुमार एवं उनके परिजन भावविभोर होकर नृत्य करने लगे। कार्यक्रम में सिरोड़ी, कृष्णगंज, वेलांगरी, पामेरा, पोसिंतरा एवं अनादरा सहित विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर मुमुक्षु हर्षितकुमार संघवी एवं उनके माता-पिता को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। पावापुरी ट्रस्ट मंडल की ओर से प्रबंधक सुरेंद्र जैन ने मुमुक्षु हर्षितकुमार, उनके पिता जितेंद्रभाई संघवी एवं माता रेखाबेन का तिलक, माला एवं साफा पहनाकर सम्मान किया।

श्री अग्रवाल सेवा सदन में जनरेटर का उद्घाटन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनहित को ध्यान में रखते हुए चांदपोल बाजार स्थित श्री अग्रवाल सेवा सदन में नए जनरेटर का उद्घाटन हवामहल विधायक बालमुकुंदाचार्य महाराज द्वारा किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. पी.के. अग्रवाल, मंत्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, कोषाध्यक्ष निमित गुप्ता सहित अन्य ट्रस्टीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान ट्रस्ट पदाधिकारियों ने विधायक बालमुकुंदाचार्य महाराज को सेवा सदन का अवलोकन कराया तथा ट्रस्ट द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों एवं विकास कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हाल ही में सेवा सदन में कई आधुनिक एवं आवश्यक सुविधाओं का विस्तार किया गया है। इनमें भूतल एवं प्रथम मंजिल पर संपूर्ण ग्रेनाइट फ्लोरिंग, वॉल टाइल्स कार्य, वाटर कूलर की व्यवस्था तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं का विकास शामिल है। इस अवसर पर विधायक बालमुकुंदाचार्य महाराज ने सेवा सदन की व्यवस्थाओं एवं विकास कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि इतनी पुरानी धरोहर को सुव्यवस्थित ढंग से संरक्षित एवं विकसित करना सराहनीय कार्य है। उन्होंने ट्रस्ट द्वारा जनसेवा एवं सामाजिक हित में किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा भी की। कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

गंगापुर सिटी में दिगंबर जैन सोशल ग्रुप की जल सेवा, भीषण गर्मी में महिलाओं का सराहनीय योगदान

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप
गंगापुर सिटी

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया

भीषण गर्मी के बीच रेल यात्रियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से दिगंबर जैन सोशल ग्रुप, गंगापुर सिटी द्वारा रेलवे स्टेशन पर निःशुल्क जल सेवा का कार्य निरंतर जारी है। उल्लेखनीय है कि यह सेवा पिछले 18 वर्षों से लगातार संचालित की जा रही है। इस पुनीत कार्य में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी विशेष रूप से सराहनीय मानी जा रही है। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप की महिला प्रभारी मोनिका जैन ने बताया कि प्रतिदिन शाम के समय दर्जनों महिलाएं रेलवे स्टेशन परिसर में एकत्र होकर यात्रियों को ठंडा एवं स्वच्छ पानी उपलब्ध कराती हैं। उन्होंने कहा कि भीषण गर्मी के दौरान स्टेशन पर लगे वाटर कूलर एवं अन्य व्यवस्थाएं पर्याप्त नहीं होने से यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। ऐसे में सामाजिक संगठनों द्वारा की जा रही जल सेवा यात्रियों के लिए बड़ी राहत साबित हो रही है। उन्होंने बताया कि रेलवे प्रशासन भी इस सेवा कार्य में पूरा सहयोग प्रदान कर रहा है। कोटा मंडल के अधिकांश प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा गर्मी के मौसम में जल सेवा के कार्य संचालित किए जा रहे हैं। गंगापुर सिटी स्टेशन पर भी दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के साथ-साथ अन्य सामाजिक संगठन एवं समाजसेवी समय-समय पर अपना सहयोग देते रहते हैं। राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े जनप्रतिनिधि भी स्टेशन पहुंचकर कार्यकताओं का उत्साहवर्धन करते हैं। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष नरेंद्र जैन एवं सचिव महेश जैन ने बताया कि इस सेवा कार्य में पांच दर्जन से अधिक कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि समाजसेवा की भावना से प्रेरित होकर सभी कार्यकर्ता भीषण गर्मी में यात्रियों की प्यास बुझाने का कार्य कर रहे हैं। जल सेवा ट्रॉली पर अंकित संदेश ''अहिंसा परमो धर्मः, प्यास बुझाना कर्मः'' – सेवा, करुणा और मानवता की भावना को सशक्त रूप से प्रदर्शित करता है।

सुबोध पब्लिक स्कूल में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों हेतु शिक्षक संवेदनशीलता कार्यक्रम आयोजित

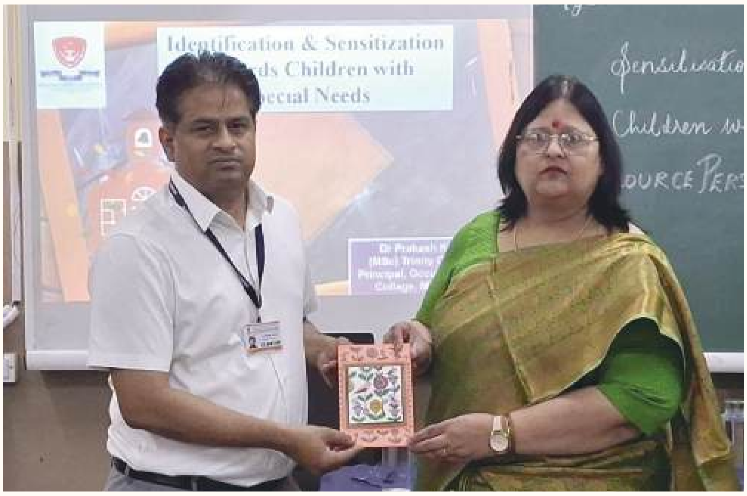

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुबोध पब्लिक स्कूल, एयरपोर्ट, सांगानेर, जयपुर में शनिवार, 16 मई 2026 को महात्मा गांधी ऑक्यूपेशनल थेरेपी कॉलेज, एम.जी.यू.एम.एस.टी. के सहयोग से विद्यालय स्टाफ के लिए विशेष आवश्यकता वाले बच्चों हेतु शिक्षक संवेदनशीलता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को ऐसे बच्चों की विविध अधिगम एवं व्यवहार संबंधी आवश्यकताओं की पहचान करने तथा उन्हें प्रभावी सहयोग प्रदान करने के लिए आवश्यक कौशलों से परिचित कराना था। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती आशी श्रीवास्तव ने मुख्य वक्ता का स्वागत वेलकम कार्ड एवं ग्रीन गोल्ड भेंट कर किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या के संबोधन से हुआ। उन्होंने कहा कि समावेशी शिक्षा आज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कई बार शिक्षक यह समझ नहीं पाते कि कोई बच्चा अपेक्षित प्रदर्शन क्यों नहीं कर पा रहा है और बिना मूल कारण जाने उसके प्रति अपनी संवेदनशीलता खो देते हैं। उन्होंने कहा कि अभिभावक भी कई बार यह स्वीकार करने में संकोच करते हैं कि उनके बच्चे को विशेष सहयोग एवं अतिरिक्त ध्यान की आवश्यकता हो सकती है। ऐसे में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वही बच्चों की विशेष आवश्यकताओं की प्रारंभिक पहचान कर अभिभावकों को संवेदनशीलता के साथ उचित मार्गदर्शन दे सकते हैं। प्राचार्या श्रीमती आशी श्रीवास्तव ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं तीव्र गति वाले समाज में यदि बच्चों की विशेष आवश्यकताओं की समय रहते पहचान नहीं हो पाती, तो उनके पीछे छूट जाने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए शिक्षकों को अधिक जागरूक एवं संवेदनशील बनने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. प्रकाश शर्मा, प्राचार्य, ओटीसी महात्मा गांधी अस्पताल थे। उन्होंने शिक्षकों को अधिगम संबंधी कठिनाइयों, एडीएचडी, डिस्लेक्सिया, डिस्ग्राफिया, व्यवहारगत चुनौतियों एवं मनो-भावनात्मक समस्याओं की प्रारंभिक पहचान के विषय में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. शर्मा ने कहा कि शिक्षकों द्वारा समय पर किया गया अवलोकन एवं हस्तक्षेप बच्चों के शैक्षणिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने समावेशी शिक्षण पद्धतियों, प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत सीखने की गति को समझने तथा गतिविधि-आधारित शिक्षण, दृश्य सहायक सामग्री, सहपाठी सहयोग एवं व्यक्तिगत ध्यान जैसी रणनीतियों के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षकों से ऐसा सहयोगात्मक एवं निष्पक्ष कक्षा वातावरण विकसित करने का आह्वान किया, जहां प्रत्येक बच्चा स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित एवं मूल्यवान महसूस कर सके। कार्यक्रम ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं अत्यंत उपयोगी रहा, जिसकी सभी शिक्षकों ने सराहना की।

महिला जैन मिलन की सदस्याओं ने किया रक्तदान

स्थापना माह के अंतर्गत आयोजित हुआ सेवा कार्य

अशोकनगर. शाबााश इंडिया। भारतीय जैन मिलन के स्थापना माह के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत महिला जैन मिलन की वीरांगना बहनों द्वारा सरकारी अस्पताल पहुंचकर रक्तदान किया गया। इस सेवा कार्य के माध्यम से सदस्याओं ने मानव सेवा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रेरणादायी संदेश दिया। महिला जैन मिलन की अध्यक्ष श्वेता जैन भोपाली, मंत्री प्रीति बाबा मेडिकल एवं कोषाध्यक्ष अंजू कांसल ने बताया कि संस्था द्वारा समय-समय पर सामाजिक एवं सेवा गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में आयोजित रक्तदान कार्यक्रम में महिला सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रक्तदान करने वाली सदस्याओं में श्वेता जैन भोपाली, दीप्ति कांसल, विनीता जैन, हर्षिता जैन, अंजू कांसल एवं शालु जैन शामिल रहीं। सभी ने मिलकर कुल 6 यूनिट रक्तदान किया। इस अवसर पर प्रीति बाबा, आशी जैन, यीशु कांसल, ममता जैन, योगिता जैन, उषा जैन, रागिनी पंसारी, सुषमा जैन सहित अन्य वीरांगना सदस्याएं भी उपस्थित रहीं और रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। अध्यक्ष श्वेता जैन भोपाली ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ''रक्तदान महादान है। एक यूनिट रक्त किसी जरूरतमंद व्यक्ति का जीवन बचा सकता है। समाज के प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को समय-समय पर रक्तदान अवश्य करना चाहिए।'' कार्यक्रम सेवा, सहयोग एवं मानवता की भावना के साथ सम्पन्न हुआ।

बंगाल के पुरुलिया जिले में आयोजित शिक्षण शिविरों का हुआ समापन

35 सराक जैन प्रतिभाओं का सम्मान, बांकुड़ा जिले में 16 मई से प्रारंभ हुए नए शिक्षण शिविर

बांकुड़ा. शाबाश इंडिया। परम पूज्य सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के 70वें अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में आचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज, आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी, आर्यिका श्री आर्षमति माताजी एवं आर्यिका श्री सुज्ञानमति माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से उड़ीसा, झारखंड एवं पश्चिम बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान एवं संस्कार आधारित शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में पश्चिम बंगाल के पुरुलिया एवं बांकुड़ा जिले के विभिन्न क्षेत्रों में 11 मई से 15 मई तक आयोजित ग्रीष्मकालीन ज्ञान संस्कार बाल शिक्षण शिविरों का समापन भव्य कार्यक्रमों एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ सम्पन्न हुआ। शिविरों का संचालन ब्रह्मचारिणी मंजुला दीदी एवं ब्रह्मचारी मनीष भैया के निर्देशन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्वानों, स्थानीय सहयोगियों एवं शिविर संचालन में सहयोग देने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गईं, जिन्हें उपस्थित जनों ने सराहा।

नन्हे हाथों की बड़ी उड़ान

जब सात वर्षीय एहिक ने रेखाओं में रच दी अपनी दुनिया

दादा के साथ नन्हा कलाकार एहिक

पिता और दादी संग एहिक

कल्पना और संवेदनाओं के सृजन ने कला प्रेमियों को किया मंत्रमुग्ध

उदयपुर. शाबाश इंडिया

अंबामाता स्कीम स्थित टखमण कला दीर्घा शनिवार शाम रंगों, रेखाओं और कल्पनाओं की अनूठी दुनिया में बदल गई। दीर्घा की दीवारों पर सजे 90 से अधिक फ्री हैंड स्कैच एवं रंगीन चित्रों को देखकर हर कला प्रेमी के मन में एक ही सवाल उठ रहा था – क्या सचमुच ये चित्र पहली कक्षा में पढ़ने वाले सात वर्षीय बालक ने बनाए हैं? यह विशेष प्रदर्शनी झीलों की नगरी उदयपुर के ख्यात कलाकार डॉ. रघुनाथ शर्मा के पौत्र एहिक शर्मा की थी। माता कृतिका शर्मा एवं पिता लक्षित शर्मा के इस नन्हे कलाकार ने अपनी कल्पनाओं और भावनाओं को जिस आत्मविश्वास एवं सहजता से कागज पर उकेरा, उसने दर्शकों को देर तक प्रदर्शनी में ठहरने पर मजबूर कर दिया। दीर्घा में प्रवेश करते ही ऐसा महसूस हो रहा था मानो किसी मासूम बालमन की खिड़की खुल गई हो। कहीं कार्टून चरित्र अपनी शरारती मुस्कान के साथ जीवंत दिखाई दे रहे थे, तो कहीं अनोखी आकृतियां किसी अनकही कहानी का हिस्सा बनती नजर आ रही थीं। पेन, पेंसिल और स्केच पेन से बनाई गई रेखाओं में बालसुलभ मासूमियत के साथ अद्भुत एकाग्रता भी दिखाई दी। कई चित्रों में स्कूल जीवन, आसपास का परिवेश और टेलीविजन की दुनिया की झलक स्पष्ट रूप से महसूस की जा सकती थी। विशेष बात यह रही कि एहिक के चित्रों में किसी प्रकार का बनावटीपन नहीं था। कहीं रेखाएं अनुशासित दिखीं तो कहीं पूरी तरह मुक्त, मानो कल्पनाएं बिना किसी बंधन के कागज पर दौड़ पड़ी हों। एक चित्र अधूरा छोड़कर दूसरे में खो जाना और फिर लौटकर उसे पूरा करना उसके भीतर छिपे सहज कलाकार की पहचान बनकर उभरा। प्रदर्शनी का शुभारंभ वरिष्ठ कलाकार प्रो. सुरेश शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि अंजना वर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर उपस्थित कला प्रेमियों के बीच चर्चा केवल चित्रों की नहीं, बल्कि उस संवेदनशील दृष्टि की थी, जो इतनी कम उम्र में एहिक के भीतर आकार ले रही है। दादा डॉ. रघुनाथ शर्मा ने मुस्कुराते हुए बताया कि एहिक कई बार अपने सपनों को कागज पर उतारकर भूल जाता है और फिर अचानक उन्हें खोजकर पूरा करने बैठ जाता है। उन्होंने कहा कि शायद यही सहजता उसकी कला को विशेष पहचान दे रही है। उदयपुर की कला भूमि इससे पूर्व भी कई नन्ही प्रतिभाओं को मंच दे चुकी है। ख्यात कलाकार कमल शर्मा की सुपुत्री कृति तथा शाहिद परवेज की पुत्री सबा परवेज भी अपनी कलात्मक प्रस्तुतियों से सुर्खियां बटोर चुकी हैं। इसके अतिरिक्त सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग के फैकल्टी चेयरमैन प्रो. हेमंत द्विवेदी की माताश्री एवं 80 वर्षीय सक्रिय कलाकार सविता द्विवेदी के प्रभावशाली चित्र भी उदयपुर और जयपुर की कला दीर्घाओं में दर्शकों का मन मोह चुके हैं।

रिपोर्ट / फोटोः
राकेश शर्मा ''राजदीप''

गोनेर में जीवदया कार्यक्रम आयोजित

पक्षियों के लिए लगाए गए परिंडे एवं फीडर

जयपुर. शाबाश इंडिया। जीवदया एवं पर्यावरण संरक्षण के संकल्प के साथ जीवदया समिति महल योजना द्वारा शनिवार को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट), गोनेर में भावपूर्ण एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के तहत बेजुबान पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करते हुए परिसर में विभिन्न स्थानों पर परिंडे एवं फीडर लगाए गए। समिति अध्यक्ष मैना गंगवाल ने बताया कि भीषण गर्मी के मौसम में पक्षियों और अन्य जीवों के संरक्षण के उद्देश्य से यह अभियान चलाया गया है। उन्होंने कहा कि जीवों के प्रति करुणा, संवेदनशीलता एवं सहअस्तित्व का भाव भारतीय संस्कृति की पहचान है और समाज को इस दिशा में जागरूक करना समय की आवश्यकता है। कार्यक्रम के दौरान संस्थान परिसर में पेड़-पौधों पर परिंडे एवं फीडर बांधे गए, ताकि पक्षियों को नियमित रूप से दाना एवं पानी उपलब्ध हो सके। इस अवसर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य सुरेश अग्रवाल एवं उपप्रधानाचार्य आराधना जैन ने जीवदया समिति के सदस्यों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने प्रतिदिन पक्षियों के लिए दाना-पानी उपलब्ध कराने का संकल्प भी लिया। कार्यक्रम में डॉ. ऋतु बड़जात्या, डॉ. सुनीता, मुकेश, डॉ. मंजू, अंकित, नेहा, अभिषेक-सपना सांघी, तोशी, आशा एवं अंकिता सहित संस्था के पदाधिकारियों, शिक्षाविदों एवं समिति कार्यकताओं ने सक्रिय सहभागिता निभाई।

शनि अमावस्या पर अजमेर शहर व्यापार महासंघ द्वारा शीतल पेय वितरण

भीषण गर्मी में राहगीरों को मिली राहत

अजमेर. शाबाश इंडिया। शनि अमावस्या के पावन अवसर एवं भीषण गर्मी को देखते हुए अजमेर शहर व्यापार महासंघ द्वारा पुरानी मंडी स्थित चौक में आमजन एवं राहगीरों के लिए कैरी-नुगरे युक्त मीठे शीतल पेय का वितरण किया गया। सेवा कार्य के दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने शीतल पेय ग्रहण कर गर्मी से राहत महसूस की। महासंघ के प्रवक्ता कमल गंगवाल एवं विकास अग्रवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि महासंघ के अध्यक्ष किशन गुप्ता के नेतृत्व में आयोजित इस सेवा कार्य में लगभग 500 लीटर शीतल पेय वितरित किया गया। झुलसाती गर्मी और तेज धूप के बीच यह सेवा कार्य राहगीरों के लिए अत्यंत लाभकारी साबित हुआ। उन्होंने बताया कि अजमेर शहर व्यापार महासंघ समय-समय पर जनहित एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े विभिन्न सेवा कार्य आयोजित करता रहता है। महासंघ द्वारा किए जा रहे इन प्रयासों की आमजन द्वारा भी सराहना की जा रही है। इस अवसर पर महासंघ के अध्यक्ष किशन गुप्ता, प्रवक्ता कमल गंगवाल, राजकुमार गर्ग, दीपक गुप्ता, चंदन गुप्ता सहित महासंघ के अन्य पदाधिकारी एवं व्यापारीगण उपस्थित रहे।

योग कार्यक्रम एवं निशुल्क नेचुरोपैथी चिकित्सा शिविर आयोजित

आरोग्य भारती
जयपुर महानगर
मालवीय नगर, भाग 2

जयपुर. शाबाश इंडिया। आरोग्य भारती जयपुर महानगर के मालवीय भाग के तत्वावधान में शनिवार, 16 मई 2026 को आदर्श विद्या मंदिर, मालवीय नगर के सभागार में योग कार्यक्रम एवं निशुल्क नेचुरोपैथी चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 6 बजे से 7 बजे तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के पूर्वाभ्यास के रूप में आयोजित विशेष योग सत्र के साथ हुआ। योग कार्यक्रम में आरोग्य भारती मालवीय भाग के अध्यक्ष डॉ. गोपेश मंगल, सचिव विक्रम यदुवंशी, प्रांत सहकोषाध्यक्ष डॉ. इन्द्र कुमार जैन, प्रांत कार्यालय सचिव डॉ. अंकित गर्ग, प्रांत चिकित्सक संयोजक डॉ. के.के. शर्मा सहित अनेक पदाधिकारियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में स्थानीय नागरिकों एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारियों की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रही। इस अवसर पर प्रवासी अधिकारी एवं प्रांत सहसचिव डॉ. महेंद्र उपाध्याय ने अपने उद्बोधन में योग को स्वस्थ जीवन का आधार बताते हुए नियमित योगाभ्यास अपनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि मानसिक एवं आध्यात्मिक संतुलन का भी प्रभावी माध्यम है। योग सत्र के पश्चात दीप प्रज्वलन के साथ नेचुरोपैथी चिकित्सा शिविर का शुभारंभ किया गया। शिविर में चरखी दादरी (हरियाणा) से पधारे डॉ. मही प्रताप सिंह द्वारा रोगियों को चिकित्सा परामर्श एवं उपचार प्रदान किया जा रहा है। डॉ. इन्द्र कुमार जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि यह निशुल्क चिकित्सा शिविर 16 मई से 18 मई 2026 तक प्रतिदिन प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक तथा सायं 5 बजे से 7 बजे तक संचालित किया जाएगा। शिविर का संयोजन वनवासी कल्याण परिषद के प्रांत संरक्षक श्री हरिश्वर प्रसाद छीपा द्वारा किया जा रहा है। शिविर में नेचुरोपैथी एवं एक्यूप्रेशर पद्धति के माध्यम से विभिन्न रोगों का उपचार किया जा रहा है, जिसका लाभ बड़ी संख्या में नागरिक प्राप्त कर रहे हैं।

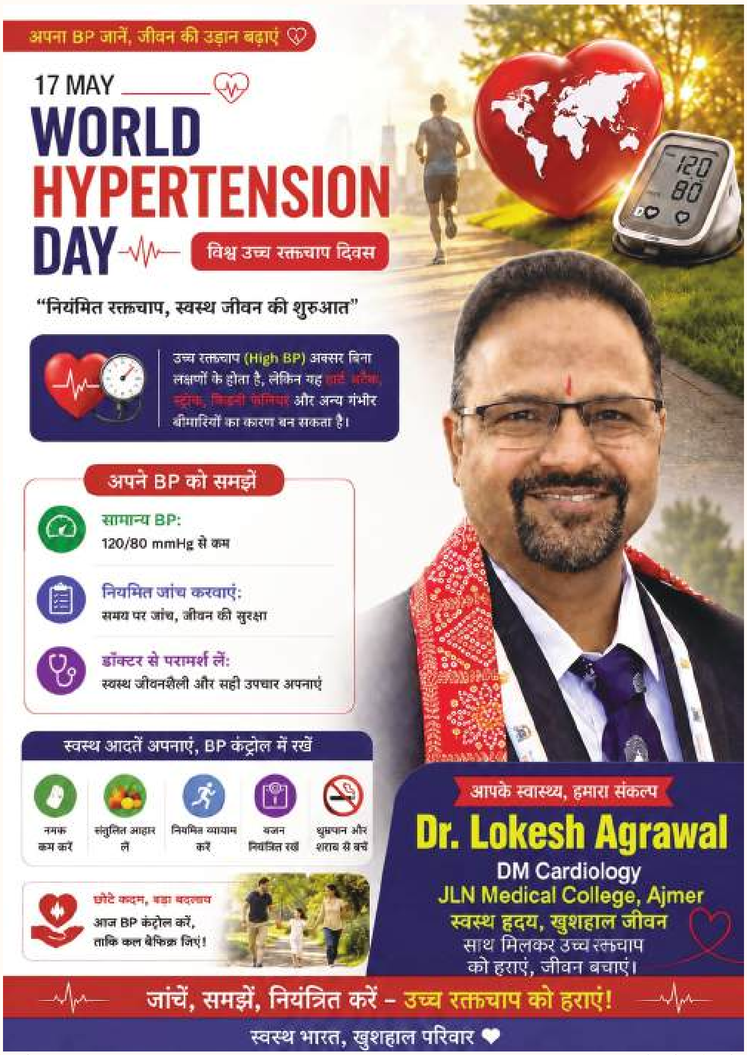
अपना BP जानें, जीवन की उड़ान बढ़ाएं
17 MAY
WORLD HYPERTENSION DAY
विश्व उच्च रक्तचाप दिवस
"नियंमित रक्तचाप, स्वस्थ जीवन की शुरुआत"
उच्च रक्तचाप (High BP) अक्सर बिना लक्षणों के होता है, लेकिन यह हार्ट अटैक, स्ट्रोक, किडनी फेलियर और अन्य गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है।
अपने BP को समझें
सामान्य BP: 120/80 mmHg से कम
नियमित जांच करवाएं: समय पर जांच, जीवन की सुरक्षा
डॉक्टर से परामर्श लें: स्वस्थ जीवनशैली और सही उपचार अपनाएं
स्वस्थ आदतें अपनाएं, BP कंट्रोल में रखें
नमक कम करें
संतुलित आहार लें
नियमित व्यायाम करें
वजन नियंत्रित रखें
धूम्रपान और शराब से बचें
छोटे कदम, बड़ा बदलाव
आज BP कंट्रोल करें, ताकि कल बेफिक्र जिएं!
आपके स्वास्थ्य, हमारा संकल्प
Dr. Lokesh Agrawal
DM Cardiology
JLN Medical College, Ajmer
स्वस्थ हृदय, खुशहाल जीवन
साथ मिलकर उच्च रक्तचाप को हराएं, जीवन बचाएं।
जांचें, समझें, नियंत्रित करें - उच्च रक्तचाप को हराएं!
स्वस्थ भारत, खुशहाल परिवार

फागी कस्बे से इंदौर रवाना हुआ श्रद्धालुओं का दल

आचार्य आदित्य सागर महाराज के दर्शन कर प्राप्त किया धर्म लाभ

ज्ञान की वृद्धि मन की स्थिरता से होती है: आचार्य आदित्य सागर

फागी/जयपुर/इंदौर. शाबाश इंडिया। फागी कस्बे से श्रद्धालुओं का एक दल मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में विराजमान आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज ससंघ के दर्शनार्थ रवाना हुआ। श्रद्धालु इंदौर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती मंदिर, अंजनी नगर पहुंचे, जहां ग्रीष्मकालीन वाचना के माध्यम से धर्म प्रभावना का कार्य चल रहा है। श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री एवं ससंघ के दर्शन कर धर्म लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर मुनि श्री 108 अप्रमितसागर जी महाराज, मुनि श्री 108 सहजसागर जी महाराज तथा क्षुल्लक श्री 105 श्रेयश सागर जी महाराज भी विराजमान रहे। कार्यक्रम में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने सहभागिता करते हुए बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ राजाबाबू गोधा, चित्रा गोधा तथा उदित-पूनम गोधा द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने मुनि संघ का पाद प्रक्षालन कर धर्म लाभ प्राप्त किया। मंदिर समिति की ओर से अध्यक्ष देवेंद्र सोगानी, उपाध्यक्ष ऋषभ पाटनी, सचिव संजय मोदी एवं कोषाध्यक्ष अशोक टोंग्या सहित समस्त कार्यकारिणी ने गोधा परिवार का साफा, माला, तिलक एवं दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया। अपने मंगलमय प्रवचन में आचार्य श्री आदित्य सागर जी महाराज ने मन की स्थिरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ''एकाग्र मन ही मनुष्य का सच्चा मित्र है। जितना मन स्थिर और एकाग्र रहेगा, उतनी ही शीघ्र ज्ञान की वृद्धि होगी।'' उन्होंने कहा कि सुख और दुख दोनों ही परिस्थितियों में मन को समान रखने का अभ्यास करना चाहिए। आचार्य श्री ने कहा कि तनाव और अशांति दुख का मुख्य कारण हैं। जब व्यक्ति परिणामों के मोह का त्याग कर देता है, तब मन स्वतः स्थिर होने लगता है। उन्होंने वर्तमान में जीने की प्रेरणा देते हुए कहा कि अतीत की गलतियों का पछतावा और भविष्य की अत्यधिक चिंता मन को अशांत करती है, जबकि वर्तमान परिस्थितियों को स्वीकार करना ही वास्तविक स्थिरता प्रदान करता है। उन्होंने आगे कहा कि ''जिसने अपने मन को जीत लिया, मन उसका सबसे बड़ा मित्र बन जाता है, और जिसने मन को नहीं जीता, वही मन उसका सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है।'' कार्यक्रम में मंदिर समिति की कार्यकारिणी सहित सकल जैन समाज के अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

> अपने मंगलमय प्रवचन में आचार्य श्री आदित्य सागर जी महाराज ने मन की स्थिरता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ''एकाग्र मन ही मनुष्य का सच्चा मित्र है। जितना मन स्थिर और एकाग्र रहेगा, उतनी ही शीघ्र ज्ञान की वृद्धि होगी।''

राजाबाबू गोधा: मीडिया प्रवक्ता, जैन महासभा राजस्थान

जैन मंदिर में मनाया गया आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महामुनिराज का समाधि स्मृति महोत्सव

झुमरीतिलैया. शबााश इंडिया। जैन संत पूज्य मुनि श्री 108 धर्मसागर जी महाराज एवं मुनि श्री 108 भावसागर जी महाराज के पावन सानिध्य में शनिवार, 16 मई 2026 को झुमरीतिलैया के बड़े जैन मंदिर में संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के गुरु आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महामुनिराज का समाधि स्मृति महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक भावनाओं के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं शास्त्र अर्पण के साथ हुआ। इस अवसर पर सुबोध आशा जैन गंगवाल के निर्देशन में संगीतमय गुरु पूजन का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने भावपूर्वक सहभागिता निभाई। अपने मंगल प्रवचन में पूज्य मुनि श्री 108 धर्मसागर जी महाराज ने कहा कि जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीते हैं, उनका केवल मरण होता है, किंतु जो स्वयं के साथ दूसरों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं, उन्हें समाज सदैव स्मरण करता है। उन्होंने कहा कि सभी धर्म जीने की कला सिखाते हैं, जबकि जैन धर्म मृत्यु को भी साधना और महोत्सव के रूप में स्वीकार करना सिखाता है। संसार जहां मृत्यु से भयभीत रहता है, वहीं समाधि रूपी मृत्यु को जैन दर्शन में श्रेष्ठ माना गया है। मुनि श्री 108 भावसागर जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि संतजन कषाय और काय की सल्लेखना करते हुए मृत्यु को भी महोत्सव में परिवर्तित कर देते हैं। उन्होंने कहा कि शरीर एक दिन नश्वर है, किंतु आत्मा की सुरक्षा एवं कल्याण के लिए सल्लेखना ग्रहण की जाती है। दीक्षा भी सल्लेखना की साधना का ही मार्ग है, जिसमें क्रमशः अन्न-जल का त्याग एवं निर्जल उपवास जैसी कठिन साधनाएं शामिल होती हैं।

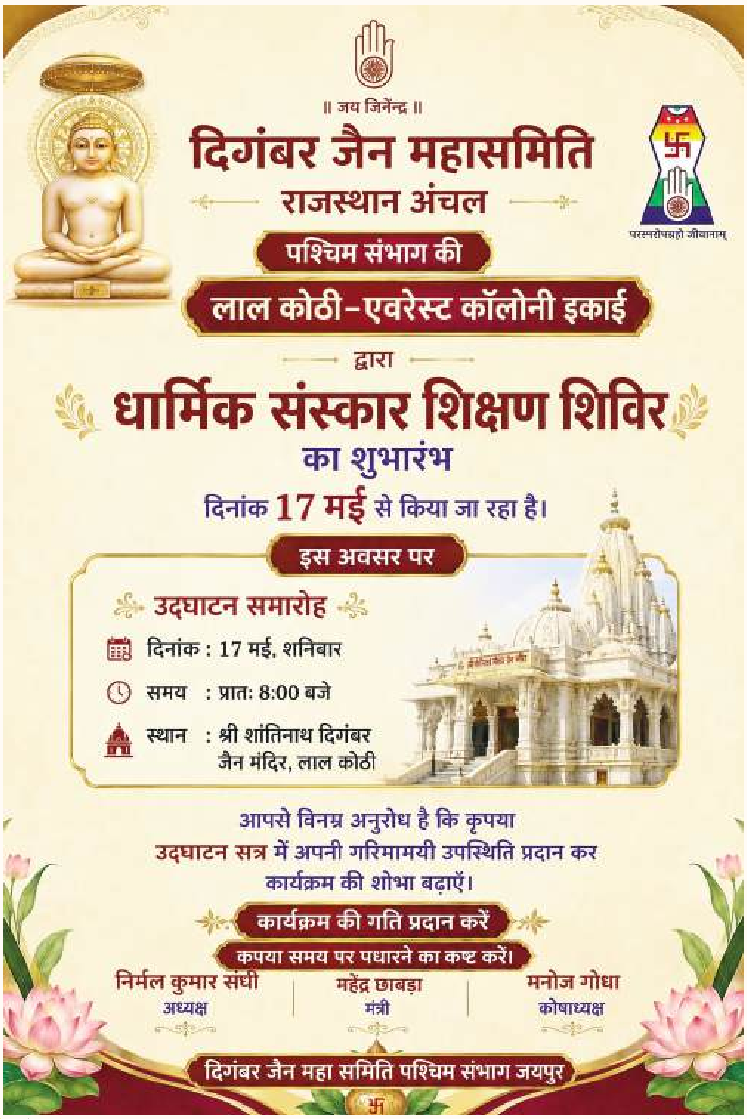
॥ जय जिनेंद्र ॥
दिगंबर जैन महासमिति
राजस्थान अंचल
परस्परोपग्रहो जीवानाम्
पश्चिम संभाग की
लाल कोठी-एवरेस्ट कॉलोनी इकाई
द्वारा
धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर
का शुभारंभ
दिनांक 17 मई से किया जा रहा है।
इस अवसर पर
उदघाटन समारोह
दिनांक : 17 मई, शनिवार
समय : प्रात: 8:00 बजे
स्थान : श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, लाल कोठी
आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया
उदघाटन सत्र में अपनी गरिमामयी उपस्थिति प्रदान कर
कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।
कार्यक्रम की गति प्रदान करें
कपया समय पर पधारने का कष्ट करें।
निर्मल कुमार संघी अध्यक्ष
महेंद्र छाबड़ा मंत्री
मनोज गोधा कोषाध्यक्ष
दिगंबर जैन महा समिति पश्चिम संभाग जयपुर

शांति नगर जैन मंदिर में धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के तत्वावधान में श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर, शांति नगर में धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का शुभारंभ श्रद्धा एवं विधि-विधान के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण एवं धार्मिक अनुष्ठानों के साथ किया गया। इस अवसर पर कलश स्थापना का सौभाग्य सुशील-इंदु गोधा परिवार को प्राप्त हुआ, जबकि दीप प्रज्वलन शैलेष-सुनीता पांड्या परिवार द्वारा किया गया। कलश स्थापना की संपूर्ण विधि पंडित निर्मल कुमार बोहरा ने वैदिक एवं जैन रीति-विधान के अनुसार सम्पन्न करवाई। कार्यक्रम में श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर से पधारी विदुषी दीदियों, अतिथियों एवं समाज के वरिष्ठजनों का प्रबंधकारिणी समिति एवं संयोजकों द्वारा सम्मान किया गया। मंत्री सुनील बिलाला ने बताया कि समारोह में पाठशाला के छात्र-छात्राओं, महिला एवं पुरुष वर्ग, बालक-बालिकाओं, महिला मंडल एवं युवा मंडल सहित बड़ी संख्या में समाजबंधुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। नवल जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि 17 मई 2026 से प्रतिदिन सायंकाल 7:30 बजे नियमित धार्मिक संस्कार पाठशाला का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने समाजबंधुओं से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मज्ञान अर्जित करने एवं बच्चों को संस्कारमय शिक्षा से जोड़ने का आग्रह किया। कार्यक्रम भक्तिमय एवं संस्कारमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

मंत्री सुनील बिलाला ने बताया कि समारोह में पाठशाला के छात्र-छात्राओं, महिला एवं पुरुष वर्ग, बालक-बालिकाओं, महिला मंडल एवं युवा मंडल सहित बड़ी संख्या में समाजबंधुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।